UNIT - I

गोदान -प्रेमचन्द

इकाई -1 इकाई की रूपरेखा :

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 कथा सार

1.3 भारतीय किसान की स्थिति

1.4 गाय का महत्व

1.5 शोषण - आर्थिक (ऋण समस्या), सामाजिक, यौन

1.6 राष्ट्रीय आन्दोलन, स्वराज की चेतना

1.7 चरित्र -चित्रण

1.8 व्याख्याएँ

1.9 अभ्यास प्रश्न

Scanned by TapScanner

उद्देश्य

8.0. उद्देश्य

उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द ने अपने यथार्थपरक उपन्यास 'गोदान' की रचना सन् 1936ई. में की थी । इसमें भारतीय किसान की जीवन -गाथा अत्यन्त हृदयस्पर्शी ढंग से वर्णित है । यह आज के संदर्भ में भी प्रासंगिक है । इसे पढ़ने के बाद आप -

भारतीय किसान की आर्थिक और सामाजिक स्थिति की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे ।

नारी -उत्पीड़न, नारी के शोषण, नारी की मानसिकता का पता कर लेंगे ।

गोदान के मूल में गाय को पालने की लालसा, उसके लिए अर्थ का जुगाड़ करने की कोशिश, गाय के धार्मिक महत्त्व आदि से परिचित होने के साथ-साथ होरी के दर्दनाक अंत को जान सकेंगे ।

पूँजीपतियों के षडयंत्र के परिणाम स्वरूप ग्रामीण लोगों का जीवन कितना दयनीय हो जाता है, उस पर विवेचन कर सकेंगे ।

कर्ज, लगान और खेती - ये तीनों कष्ट झेलते हुए कैसे गाँव के लोग धूप की तरह जल-जलकर नि:शेष हो जाते हैं, उस पर ध्यान केंद्रित कर सकेंगे ।

8.1 प्रस्तावना :

प्रेमचन्द ने हिन्दी कथासाहित्य भंडार को पुष्ट किया है । पंच परमेश्वर उनकी पहली कहानी है । यह 1905 ई. में प्रकाशित हुई । उन्होंने लगभग 300 कहानियाँ लिखी हैं । 'मानसरोवर' नाम से चार खंडों में इनका प्रकाशन हुआ है । सवा सेर गेहूँ, दो बैलों की कथा, बलिदान, कफन, मुक्तिमार्ग, पूस की रात, उनकी श्रेष्ठ कहानियों में हैं ।

उनका प्रथम उपन्यास 'सेवा सदन' सन् 1916 ई. में प्रकाशित हुआ । उनके अन्य उपन्यास हैं - प्रेमाश्रम, निर्मला, रंगभूमि, कायाकल्प, गबन, कर्मभूमि, गोदान,

सन् 1903 ई. में प्रेमचन्द ने एक लेख में लिखा था - ऐसा बहुत कम संयोग हुआ है कि एक शांति प्रेमी किसान के रोजाना हालात विस्तार के साथ लिखे हुए मिल सकते हों या उनमें किस्सों की-सी दिलचस्पी और अजब -अनोखी बातें पाई जाती हों ।

Scanned by TapScanner

इस इच्छा को उन्होंने होरी-धनिया को नायक-नायिका बनाकर 'गोदान' उपन्यास लिखकर पूरा किया । इसमें तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक परिवेश का परिचय मिल जाता है तथा गाँव में सरल, सदाचारी, भाग्यवादी जनता कैसे गाँव के मुखिया, महाजन, पुरोहित और जमींदार मिल-मालिक किसानों का हर प्रकार से शोषण करके उनको जिन्दगी का जुआ ढोने को विवश कर देते हैं । रसहीन जीवन में उनके सपने को साकार होने का मौका नहीं मिलता । गोदान में प्रेमचन्द ने गाँव की दरिद्रता, भुखमरी, धर्मांधता सरल विश्वास आदि का बारीकी से चित्रण किया है ।

8.2. कथासार :

अवध प्रांत में पांच मिल के फासले पर दो गाँव हैं : सेमरी और बेलारी । होरी बेलारी में रहता है और राय साहब अमर पाल सिंह सेमरी में रहते हैं । खन्ना, मालती और डॉ. मेहता लखनऊ में रहते हैं ।

गोदान का आरंभ ग्रामीण परिवेश से होता है । धनिया के मना करने पर भी होरी रायसाहब से मिलने बेलारी से सेमरी जाता है । उसे लगता है कि रायसाहब से मिलते रहने से कुछ सामाजिक मर्यादा बढ़ जाती है । वह कहता है, "यह इसी मिलते-जुलते रहने का परसाद है कि अब तब जान बची हुई है ।" वह समझता है कि इनके पाँवों तले अपनी गर्दन दबी हुई है । इसलिए उन पाँवों के सहलाने में ही कुशल है ।

रास्ते में उसे पड़ोस के गाँव का ग्वाला भोला मिलता है । उसकी गायों को देखकर होरी के मन में एक गाय रखने की लालसा उत्पन्न होती है । वह विधुर भोला के मन में फिर से सगाई करा देने का लालच देता है । भोला उसे अस्सी रुपये की गाय उधार पर ले जाने का आग्रह करता है और अपने पास भूसे की कमी की बात करता है । होरी अभाव में पड़े आदमी से गाय ले लेने को उचित न मानकर फिर ले लूंगा । कहकर गाय लेने से मना कर देता है, पर भूसा देने का वायदा कर सेमरी में पहुँचता है ।

रायसाहब अपनी असुविधाओं को बता कर चाहते हैं कि टैक्स की वसूली में होरी उनकी सहायता करे । होरी उनकी बातों में आ जाता है । इस समय एक आदमी आकर राय साहब को बताता है कि मजदूर बेगार करने से मना कर रहे हैं । यह सुनकर राय साहब आग बबूला हो जाते हैं और उन्हें हंटर से ठीक करने की कह उठकर चले जाते हैं ।

घर पर पहुँकर होरी रायसाहब भी तारीफ करता है तो बेटा गोबर उन्हें 'रंगा सियार' कहकर उनसे अपनी नफरत जाहिर करता है । होरी बताता है कि उसने भोला को भूसा देने का वचन दिया है । यह सुनकर गोबर और धनिया उस पर बिगड़ते हैं । होरी जब बताता है कि भोला धनिया की प्रशंसा कर रहा

Scanned by TapScanner

था, तब धनिया कुछ नरम पड़ जाती है । भोला भूसा लेने आता है । धनिया तीन खोंचे भूसा भरवाकर पति और बेटे को उसके घर तक भूसा पहुँचाने को कहती है ।

भोला के घर पर उसकी विधवा बेटी झुनिया है । उससे गोबर की मुलाकात होती है । दोनों परस्पर के प्रति आकर्षित हो जाते हैं । भोला होरी से दूसरे दिन गाय ले लेने को कहता है ।

दूसरे दिन गोबर भोला के घर से गाय लाता है । झुनिया उसे छोड़ने बेलारी के निकट तक आती है । फिर मिलने का वायदा करके लौट जाती है ।

गाय के आते ही होरी के घर में आनन्द की लहर उमड़ती है । गाय का भव्य स्वागत किया जाता है । गाय के लिए आँगन में नाँद गाड़ी जाती है । गाँववाले आकर गाय के लक्षण भी और होरी की खुशकिस्मती की तारीफ करते हैं । केवल अलग्योझा हो गए उसके दो भाई हीरा और शोभा नहीं आते । इससे होरा को बड़ा दु:ख होता है । वह जब हीरा को बुलाने जाता है तो सुनता है कि हीरा शोभा के सामने होरी की निंदा कर रहा था । होरी धनिया को यह बताता है । धनिया यह सुनकर उससे झगड़ती है ।

सेमरी में राय साहब के घर पर उत्सव है । उसमें धनुषयज्ञ नाटक में होरी जनक के माली का अभिनय करता है । उत्सव के लिए होरी को पांच रुपये नजराना देना है । राय साहब के मेहमानों में गाँव और शहर के लोग हैं । शहर के मेहमान हैं - बिजली पत्र के संपादक पं. ओंकारनाथ, वकील तथा दलाल मि. तंखा, दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर डॉ. मेहता, मिल मालिक मि. खन्ना, उनकी धर्मपत्नी कामिनी (गोविन्दी), डाक्टर मिस मालती और मिर्जा खुर्शीद ।

वहाँ बातचीत में रायसाहब जमींदारी प्रथा के शोषण की निंदा करते हैं । डॉ. मेहता और रायसाहब की कथनी और करनी के अंतर के प्रति व्यंग्य करते हैं । भोजन के समय मांस-मदिरा का स्थान छोड़कर ओंकारनाथ अलग से फलाहार करना चाहते हैं । पर मिस मालती अपनी बातों से ओंकारनाथ को भुलावे में डालकर शराब पिलवा देती है और वायदे के मुताबिक एक हजार रुपये इनाम लेती है । उसी समय पठान के वेश में डॉ. मेहता आकर रुपये मांगते हैं और धमकी देते हैं कि रुपये न मिले तो वे गोली चला देंगे । अंत में होरी वहाँ प्रवेश करके पठान को गिराकर उसकी मूँछें उखाड़ लेता है । पठान के वेश में आए मेहता की नाटकबाजी वहीं खतम हो जाती है ।

उसी समय सब शिकार खेलने जाने का कार्यक्रम बनाते हैं । तीन टोलियाँ बनती हैं । पहली टोली में मेहता और मालती जाते हैं । मालती मेहता के प्रति आकर्षित है, पर मेहता को इस ओर कोई आकर्षण नहीं है । मेहता को शिकार की चिड़िया पानी से लाकर एक जंगली लड़की देती है और दोनों को अपने घर तक ले जाकर मधुर व्यवहार से खुश कर देती है । इससे मालती ईर्ष्या करती है तो वह

Scanned by TapScanner

मेहता की नजर में गिर जाती है । दूसरी टोली के रायसाहब और खन्ना के बीच मिल के शेयर के बारे में बातचीत होती है । रायसाहब शेयर खरीदने की बात टाल देते हैं । तीसरी टोली में तंखा और मिर्जा हैं । मिर्जा एक हिरन का शिकार करते हैं । हिरन को एक ग्रामीण युवक को देते हैं । सब मिलकर उस युवक के गाँव में जाते हैं । खा-पीकर खुशी से सारा दिन वहाँ बिताकर शाम को लौट आते हैं ।

होरी के घर पर गाय आ जाने से सब खुश थे । इतने में रायसाहब का कारिंदा कहता है कि नोखेराम बाकी लगान न चुकाने वाले खेत में हल नहीं जोत सकेंगे । होरी पैसे का इंतजाम करने के लिए साहूकार झींगुरीसिंह के पास पहुँचता है । झींगुरी सिंह की आँख गाय पर थी । उसने गाय ले लेने का चक्कर चलाया और कर्ज न लेकर लाचार होकर गाय बेचकर लगान चुकाने के लिए वह राजी हो जाता है और धनिया को भी राजी कर लेता है । रात को घर के भीतर उमस होने के कारण वह गाय को बाहर लाकर बांधता है और बीमार शोभा को देखकर लौटते समय गाय के पास हीरा को देखकर ठिठक जाता है । उसी रात को विष दिए जाने से गाय मर जाती है तो होरी धनिया को हीरा पर शक होने की बात बता देता है तो धनिया हीरा को गालियाँ देती है और सारे गाँव में कोहराम मचा देती है । होरी भाई को बचाने के लिए सच को छिपाकर गोबर की झूठी कसम खा लेता है । जाँच पड़ताल करने दरोगा गाँव में आता है । गाँव के मुखिया लोग इस विपत्ति का फायदा उठाने के लिए हीरा पर जुर्माना लगाते हैं । कुर्की से बचने तथा परिवार की इज्जत बचाने होरी झिंगुरी सिंह से कर्ज लेकर रिश्वत के पैसे लाता है, पर धनिया के कारण वह दारोगा को मिल नहीं पाता । दारोगा मुखिया लोगों के घर की तलाशी लेने की धमकी देकर उनसे भी रिश्वत के पैसे बसूल करके चला जाता है ।

गोहत्या करके पाप के डर से हीरा घर से भाग जाता है । होरी हीरा की पत्नी पुनिया का खेत संभालता है । बीच में एक महीने तक बीमार भी पड़ जाता है ।

एक रात होरी कड़कती सर्दी में खेत की रखवाली कर रहा था कि धनिया वहाँ पहुँच जाती है और बताती है कि पांच महीने का गर्भ लेकर झुनिया घर में आ गई है । होरी पहले उसे निकाल देने की बात तो करता है, बाद में धनिया के समझाने पर उसे अपने घर में रहने का आश्वासन देता है । अब फिर से पंचायत को होरी का गला दबाने का मौका मिल जाता है । झुनिया के एक लड़का होता है । बिरादरी में ऐसे पाप के लिए गाँव की पंचायत होरी पर सौ रुपए नकद और तीस मन अनाज का डाँड लगाती है । धनिया पंचायत पर बहुत फुफकारती है । पर होरी झिंगुरी सिंह के पास मकान रेहन पर रखकर अस्सी रुपये लाता है और डाँड चुकाता है ।

गोबर -झुनिया को चुपके से अपने घर में छोड़कर लोकलज्जा के भय से लखनऊ शहर भाग जाता है । वह मिर्जा खुर्शीद के यहाँ महीने के पंद्रह रुपये वेतन पर नौकरी करता है । उनकी दी कोठरी में रहता है ।

Scanned by TapScanner

डाँड में सारा अनाज दे देने के बाद होरी के पास कुछ नहीं बचता । इसी समय पुनिया उसकी सहायता करती है । वर्षा के अभाव से उसकी ईख सूख जाती है । भोला गाय के रुपये लेना चाहता है । होरी रुपये दे नहीं पाता । भोला होरी के बैल खोलकर ले जाता है । गाँववाले इसका विरोध करते हैं, पर धर्म के भय से मर्यादावादी और ईमानदार होरी विवश होकर इसकी अनुमति दे देता है ।

मालती राजनीतिक और सामाजिक कार्यों में व्यस्त रहने वाली महिला है । उसके प्रत्यत्न से मेहता वीमेन्स लीग में भाषण देने के दौरान महिलाओं को समान अधिकार की मांग छोड़कर त्याग, दया, क्षमा अपनाने का सुझाव देते हैं, जो गृहस्थ जीवन के लिए निहायत जरूरी है ।

मालती मेहता से सहमत होती है । वह मेहता को अपने घर पर खाने बुलाती है । उसी समय मेहता आरोप लगाते हैं कि उसी के कारण मि. खन्ना ,मिसेज खन्ना से अच्छा बर्ताव नहीं करते । यह सुनकर मालती बिगड़ जाती है और अपने घर चली जाती है ।

रायसाहब को पता चल जाता है कि होरी से वसूल किए गए डाँड के सारे के सारे पैसे गाँव के मुखिया लोग खा गए । वे नोखेराम से रुपये देने को कहते हैं तो चारों महाजन 'बिजली' के संपादक ओंकारनाथ को सूचना दे देते हैं कि रायसाहब आसामियों से जुर्माना वसूल करते हैं । ओंकारनाथ रायसाहब को बताते हैं कि वे अपनी पत्रिका में ऐसी सनसनीखेज खबर छापने जा रहे हैं । रायसाहब सौ ग्राहकों का चंदा रिश्वत के रूप में भरकर किसी तरह इसे छापने से रोक लेते हैं ।

जब गाँव में बुवाई शुरू हो जाती है तब होरी के पास बैल नहीं हैं । होरी की लाचारी का फायदा उठाकर दातादीन होरी से साझे में बुवाई करने का प्रस्ताव देकर होरी को मजदूर के स्तर तक ले जाता है ।

उधर दातादीन का बेटा मातादीन झुनिया को प्रेम-पाश में फँसाने के लिए प्रयास करता है । लेकिन बीच में सोना पहुँच जाने से मामला गड़बड़ होने से बच जाता है ।

होरी ईख बेचने जाता है तो मिल मालिक से मिलकर महाजन सारा रुपया कर्ज के लिए वसूल कर लेते हैं ।

मि. खन्ना और उसकी पत्नी गोविंदी के स्वभाव में आकाश - पाताल का अंतर है । गोविंदी सादा जीवन पसन्द करती है तो मि. खन्ना विलासमय जीवन । एक बार पति-पत्नी में बेटे के इलाज के लिए भिन्न -भिन्न डाक्टरों को बुलाने के मतांतर पर झगड़ा हो जाता है । क्रोध से गोविंदी पार्क में चली जाती है । वहीं उसकी मुलाकात मेहता से होती है । मेहता उसकी प्रशंसा कर के उसे समझाबुझा कर घर लौटा लाते हैं । होरी दातादीन की मजूरी करने लगता है ।

Scanned by TapScanner

होरी दातादीन की मजदूरी करने लगता है । ऊख काटते समय कड़ी मेहनत करने के कारण वह बेहोश हो जाता है । उधर गोबर अब नौकरी छोड़कर खोंचा लगाने के काम में लग जाता है । उसके पास दो पैसे हो जाते हैं । वह एक दिन गाँव में पहुँचता है । वह सभी के लिए सामान लाता है । गाँव में गोबर महाजनों की बड़ी बेइज्जती करता है । होली के अवसर पर गाँव के मुखिया लोगों की नकल करके अभिनय किया जाता है । फलस्वरूप गोबर सभी महाजनों के क्रोध का शिकार बन जाता है । जंगी को शहर में नौकरी कराने का लोभ दिखाकर उसे प्रभावित कर देते हैं । वह भोला को मना कर उससे अपने बैल ले आता है । दातादीन को तीस रुपये उधार के लिए सत्तर रुपये देना चाहता है । नोखेराम को लगान वसूल करके रसीद न देने पर उसे अदालत की धमकी देता है । झुनिया को फुसलाकर शहर जाते समय माँ से झगड़ा हो जाता है । माँ के पांव में सिर न झुकाकर बिलकुल उद्दंड और स्वार्थी बनकर बालबच्चों को लेकर शहर चला जाता है ।

राय साहब की कई समस्याएँ थीं । उनको कन्या का विवाह करना था, अदालत में एक मुकदमा करना था और सिर पर चुनाव भी थे । कुंवर दिग्विजय सिंह के साथ शादी तय हुई थी । राजा साहब के साथ चुनाव लड़ना था । पैसों की कमी थी इसीलिए वे तंखा के पास उधार मांगने के लिए जाते हैं । वे मना करते हैं तो वे खन्ना के पास जाते हैं । खन्ना पहले आनाकानी करके बाद में कमीशन लेकर पैसों का इंतजाम कर सकने की बात बताते हैं । बातचीत के दौरान मेहता महिलाओं की व्यायामशाला के लिए चंदा मांगने पहुँचते हैं । खन्ना कुछ देने से मना करते हैं । गोविंदी को भी व्यायामशाला की नींव रखने के लिए मना करते हैं । रायसाहब पांच हजार लिख देते हैं । फिर मालती पहुँचती है तो खन्ना से एक हजार का चैक लिखवा लेती है ।

मातादीन की रखैल सिलिया अनाज के ढेर से कोई सेर भर अनाज दुलारी सहुआइन को दे देती है तो मातादीन उसे धिक्कारता है । निकल जाने को कहता है । सिलिया दु:खी होती है । सिलिया के बाप हरखू के कहने पर उसके साथी मातादीन के मुँह पर हड्डी डालकर उसे जातिभ्रष्ट कर देते हैं । धनिया सिलिया को अपने घर पर रख लेती है । सिलिया मजदूरी करके गुजरबसर करती है । सोना सत्रह साल की हो गई थी । उसके विवाह के लिए पैसों की जरूरत थी । सोना को मालूम हुआ कि पिता विवाह के लिए दुलारी से दो सौ रुपये लाएँगे । सोना सिलिया को भावी पति मथुरा के पास भेजती है । ससुरालवाले बिना दहेज के बहू लेने को तैयार हो गए । लेकिन धनिया अपनी मर्यादा बचाने के लिए दहेज देना चाहती है ।

भोला एक जवान विधवा नोहरी से विवाह करता है । नोहरी के साथ बहुओं से नहीं पटती । पुत्र कामना भोला को घर से भगा देती है । नोखेराम नोहरी की लालसा से भोला को नौकर रख लेता है । नोहरी गाँव की रानी की जाती का है । लाला पटेश्वरी साहूकार मंगरू शाह को भड़काकर होरी की सारी

Scanned by TapScanner

ईख नीलाम कर देता है । इससे उगाही की उम्मीद न होने से दुलारी होरी को शादी के लिए दो सौ रुपये नहीं देती है । इतने में सहानुभूति दिखाकर नोहरी होरी को दो सौ रुपये देकर अपनी दयाशीलता का परिचय देती है ।

शहर में परिवार लाकर गोबर देखता है कि जहाँ वह खोंचा लगाता था, वहीं दूसरा बैठने लगा है । उसको कारोबार में घाटा हुआ तो वह मिल में नौकरी कर लेता है । झुनिया को गोबर की कामुकता पसंद नहीं आती । गोबर का बेटा मर जाता है । झुनिया गर्भवती है । गोबर नशा करने लगा है । झुनिया को पीटता है, गालियाँ देता है । चुहिया की सहायता से झुनिया एक बेटे को जन्म देती है । मिल में झगड़ा हो जाने से गोबर घायल हो जाता है । मिल गोबर की सेवा करने के दौरान पति पत्नी में फिर संबंध स्वाभाविक हो जाता है ।

मातादीन नोहरी के प्रति फिर से आकर्षित होता है । वह सिलिया के लिए छोटी को दो रुपये देता है । रुपये पाकर सिलिया खुश होती है । यह समाचार देने सोना के ससुराल पहुँचती है । मथुरा नोहरी से प्रेम-निवेदन करता है । दोनों पास-पास आ जाते हैं तो सोना की आवाज से पीछे हट जाते हैं । सोना सिलिया को बहुत फटकारती है ।

मिल में आग लग गई थी । मिल में नए मजदूर ठीक से काम नहीं कर पा रहे थे । इसलिए पुराने मजदूर ले लिए जाते हैं । खन्ना - गोविंदी का मनमुटाव मिट जाता है । मेहता से प्रेरित होकर मालती सेवा-व्रत में लगी रहती है । एक दिन मेहता और मालती होरी के गाँव में पहुँचकर लोगों से मिलते हैं । सहायता करते हैं । राय साहब की लड़की की शादी हो जाती है । मुकदमे और चुनाव में भी जीत होती है । वे लोग होम मेंबर भी बन जाते हैं । राजा साहब रायसाहब के पुत्र रुद्रप्रताप से अपनी बेटी के विवाह का प्रस्ताव भेजते हैं पर रुद्रप्रताप मालती की बहन सरोज से विवाह करके इंग्लैंड चला जाता है । फिर रायसाहब की बेटी और दामाद में विवाह विच्छेद हो जाता है । मालती देखती है कि दूसरों की सेवा करने के कारण ऊँची वेतन के बावजूद उन पर कर्ज है । कुर्की भी आई है । तब मालती मेहता को अपने घर पर ले आती है । उनकी सहायता करती है । मालती गोबर को माली रख लेती है । उसके बेटे की चिकित्सा और सेवा भी करती है । मालती मेहता से विवाह करना अस्वीकार करके मित्र बनकर रहने को पसंद करती है ।

मातादीन सिलिया के बालक को प्यार करता है । वह निमोनिया में मर जाता है । मातादीन सिलिया के प्रति आकर्षित होता है । सारा जाति-बंधन तोड़कर उसके साथ रहता है ।

होरी की आर्थिक दशा दिनोंदिन गिरती जाती है । तीन साल तक लगान न चुकाने से नोखेराम बेदखली का दावा करता है । मातादीन होरी को सुझाव देता है कि अधेड़ रामसेवक मेहता से रूपा की शादी करके बदले में कुछ रुपए ले लें और खेती करे । होरी यह सुनकर बड़ा दुःखी होता है । पर अंत

Scanned by TapScanner

में होरी और धनिया राजी हो जाते हैं । गोबर को शादी में आने की खबर दी जाती है । गोबर झुनिया को लेकर गाँव में पहुँचता है । रूपा की शादी होती है । मालती भी शादी में शरीक होती है । गोबर गाँव में झुनिया को छोड़कर लखनऊ चला जाता है ।

रूपा ससुराल में समृद्धि देखकर पिता की गाय की लालसा की बात सोचकर दु:खी होती है । मैके जाते समय वह एक गाय ले जाने की बात सोचती है । होरी पोते मंगल के लिए गाय लेना चाहता था । इसलिए वह कंकड़ खोदने की मजदूरी करता है । रात को बैठकर धनिया के साथ सुतली कातता है । एक दिन हीरा आकर पहुँचता है और होरी से माफी मांगता है । होरी खुश हो जाता है । होरी कंकड़ खोदते समय दोपहर की छुट्टी के समय लेट जाता है । उसको कै होती है । उसे लू लग जाती है ।

धनिया भाग कर आती है । सब इकट्ठे हो जाते हैं । शोभा और हीरा होरी को घर पर ले गए । होरी की जबान बंद हो गई । धनिया घरेलू उपचार करती है । सब बेकार जाता है । हीरा गो-दान करने को कहता है । दूसरे लोग भी यही कहते हैं । धनिया सुतली बेचकर रखे बीस आने पैसे पति के ठंडे हाथ में रखकर ब्राह्मण दातादीन से बोलती है - महाराज घर में न गाय है न बछिया, न पैसा । यही इनका गोदान है ।

1.3 भारतीय किसानों की स्थिति :

'गोदान' उपन्यास में बेलारी गाँव के किसान होरी के जीवन संघर्ष का चित्रण भारतीय किसान के संघर्ष को उजागर करता है । होरी की समस्याएँ प्रत्येक भारतीय किसान की समस्याएँ हैं । इसमें कृषक - जीवन के अंधकार पक्ष यानी केवल करुण -गाथा का चित्रण मिलता है । वास्तव में आर्थिक विपन्नता अशिक्षा और ऋण का बोझ मिलकर किसान की रीढ़ की हड्डी तोड़ देते हैं । वे दोनों समस्याएँ राक्षसी सुरसा की तरह मुँह फैलाए भारतीय किसान को निगल रही हैं ।

गोदान 1936 ई की रचना है । इसमें तत्कालीन समय के ग्राम्य जीवन की झाँकी प्रस्तुत की गई है । होरी सामंतवाद और पूँजीवाद के शोषण के चक्र में फंसता हुआ भी उससे निकलने के लिए संघर्ष करता है । छटपटाता है । अंत में टूट जाता है और काल के गाल में समा जाता है । धनिया पंच और विरादरी के अन्याय से साहसपूर्ण संघर्ष करती है । बेटा गोबर अशिक्षा, अज्ञानता और धर्मांधता का विरोध करता है । साहूकार के छल को पहचानता है । उसका विद्रोही तेवर किसान के जागरण की चेतना प्रदान करता है और आशा संचार करता है कि किसान का भविष्य मंगलमय और सुखकर होगा । लेखक भी समतामूलक समाजवाद की प्रतिष्ठा की आशा करता है ।

होरी और धनिया के सामने जमींदार, साहूकार, पटवारी, दारोगा, मिल-मालिक, पंच, विरादरी

Scanned by TapScanner

की एक प्रबल शत्रु-सेना खड़ी है और वे साहसपूर्वक उससे लोहा लेते हैं । होरी मर-मिट जाता है, पर समझौता नहीं करता ।

गोदान में प्रेमचन्द का आदर्शवादी दृष्टिकोण आकर यथार्थवादी बन गया है । दमन और उत्पीड़न के युद्ध में शोषण का चक्र कैसे राष्ट्रीय विकास में बाधा पहुँचाता है उसे किसान की दयनीय स्थिति के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है । सभी शोषण चाहे वह जमींदार का हो या साहूकार, मिल-मालिक हो या धर्म-ध्वजाधारी पुरोहित, अपना भाई हो या बिरादरी सभी अवसर की ताक में रहकर किसानों का शोषण करते हैं । वे किसान के पसीने की कमाई से हिस्सा लेकर चैन की जिन्दगी बिताते और समाज में अपनी धाक जमाना चाहते हैं ।

गाँव का जमींदार किसानों को लगान न चुकाने की स्थिति में खेत से बेदखल कर देते हैं । जमींदार अपना कोई उत्सव मनाते समय लोगों से बेगार करवाते हैं । शहर के मिल-मालिक साहूकार से षडयंत्र करके किसानों का सारा गन्ना ले लेते हैं और उनके सपनों को चकनाचूर कर देते हैं ।

गाँव में किसान आर्थिक अभाव की चक्की में पिस जाते हैं । वे प्राय: अशिक्षित हैं । इसलिए अंधविश्वास से मुक्त नहीं हो पाते । अपनी गरीबी को पूर्वजन्म के कर्मों का परिणाम और जमींदारों की धनाढ्यता को पूर्वजन्म का पुण्य मानकर संतुष्ट रहना किसानों की नियति बन जाती है । पुरोहित वर्ग, ब्राह्मण वर्ग उनको अभिशाप दे सकते हैं । प्रतिकार के लिए धार्मिक विधान करना आवश्यक है - ऐसे विचार रखनेवाले किसान शोषणतंत्र से मुक्त नहीं हो सकते ।

गाँव में संयुक्त परिवार टूट जाते हैं । भाई-भाई पर संदेह करता है । अपना उल्लू सीधा करना चाहता है । ईर्ष्या करके भाई सर्वनाश भी करता है । गाँव में लड़ाई - झगड़ा आम बात है । होरी धनिया को, हीरा - पुनिया को, कामता - भोला को, मथुरा का बाप मथुरा को, गोबर -झुनिया को पीटते हैं । पुरुष का नारी को मारना -पीटना और नारी का उसे सह जाना और पुरुष -प्रधान समाज में अपनी आवाज न उठा पाना उस समय के समाज का एक नग्न चित्र है ।

समाज में प्रतिष्ठित उच्च वर्ग के लोग अन्याय करते हैं, दुराचार करते हैं । लेकिन ऐसा कार्य कोई गरीब या निम्न वर्ग का आदमी करता है, तो गाँव भर में भूकंप हो जाता है । मातादीन एक चमारिन के, झींगुरी सिंह एक ब्राह्मणी के, नोखेराम एक अहीरिन को रखे हुए हैं । चमार मातादीन के मुँह में हड्डी डाल देते हैं । तो वे तीन सौ रुपये खर्च करके काशी पंडित के द्वारा प्रायश्चित करके शुद्ध हो जाते हैं । पर गोबर विधवा झुनिया को घर ले आता है तो पंच की दृष्टि से बहू-बेटियों की इज्जत खतरे में पड़ जाती है । इस अपराध के लिए होरी को आर्थिक दण्ड भुगतना पड़ता है ।

गाँव में आर्थिक समस्या किसान के जीवन को नरक तुल्य बना देती है । धनिया छतीसवें वर्ष की उम्र में बूढ़ी जैसी लगती है । होरी को साठ तक पहुँचने की उम्मीद नहीं है । घी-दूध तो अंजन लगाने

Scanned by TapScanner

तक को भी नहीं मिलता । होरी दु:खी है कि उनके बेटे गोबर को दूध नहीं मिलता । होरी पोते के लिए दूध की व्यवस्था करने वह एक गाय खरीदना चाहता है । इसलिए किसानी छोड़कर वह मजदूरी करता है ।

जमींदार द्वारा समय-समय पर किसानों को जमीन से बेदखली की जाती है । लगान चुकाने पर भी उन्हें रसीद नहीं मिलती । साहूकार पचास रुपये देकर सौ लिखा लेता है और वसूल करते समय दो सौ ले लेता है ।

गाँव में कुछ सामाजिक और सांस्कृतिक विशेषताएँ हैं, जो गरीबों में भी सुख का संचार कर देती हैं । होली के अवसर पर सब खुलकर नाटक खेलते हैं और अन्याय पर व्यंग्य करते हैं । होरी की गाय को देखने सब गाँववाले आते हैं । हीरा जब गाय देखने नहीं आता तो होरी उसे बुलाना चाहता है । गाँव में सभी किसान ईमानदार होते हैं । होरी सभी को पैसे चुकाता है । वह आदर्श पर अडिग रहता है । वह अपने बेटे से कहता है - '' नीति हाथ से न छोड़नी चाहिए बेटा । अपनी-अपनी करनी अपने-अपने साथ है ।''

भारतीय किसान गाय को देवता मानता है । होरी कहता है - गऊ से ही तो द्वार की शोभा है । सवेरे -सवेरे गऊ के दर्शन हो जाएँ तो क्या कहना ?'' गाय की लालसा में ही होरी की मौत हो जाती है ।

गाँव के किसान धर्म के प्रति बड़ी निष्ठा रखते हैं । इसी धर्म के डर से वे साहूकार को पाई-पाई चुका देते हैं । वे पाप-पुण्य में विश्वास करके सारी यातनाएँ सहते हैं । अंत में होरी की मुक्ति के लिए धनिया गोदान करने में असमर्थ होकर भी दातादीन को सुतली बेचने से मिले बीस आने पैसे को गोदान के रूप में दे देती है । भारतीय किसान जीवन भर मेहनत करने पर भी अपनी सामान्यतम इच्छा को पूर्ण नहीं कर पाता ।

1.4. गाय का महत्त्व :

'गोदान' उपन्यास की कथा के केंद्र में नायक होरी के मन में एक गाय रखने की लालसा है । प्रेमचन्द ने लिखा है कि - हर एक गृहस्थ की भाँति होरी के मन में भी गऊ की लालसा चिरकाल से संचित चली आती थी । यही उसके जीवन का सबसे बड़ा स्वप्न, सबसे बड़ी साध थी ।

होरी रायसाहब अमर पाल सिंह से मिलने बेलारी से सेमरी जाते समय पगडंडी के दोनों ओर ईख के पौधों की लहराती हुई हरियाली देखकर मन ही मन कहता है - भगवान कहीं गौ से बरखा कर दें और डांडी भी सुभीते से रहे, तो एक गाय जरूर लेगा । वह पछाई गाय लेगा । उसकी खूब सेवा करेगा । कुछ नहीं तो चार-पांच सेर दूध होगा । गऊ से ही तो द्वार की शोभा है । सवेरे -सवेरे गऊ के दर्शन हो

Scanned by TapScanner

जाएँ तो क्या कहना । न जाने कब यह साध पूरी होगी, कब वह शुभ दिन आएगा ।

रास्ते में भोला की गायों को देखकर होरी का मन ललचाता है । वह भोला की खुशामद करते हुए उससे कहता है -''धन्य है तुम्हारा जीवन । गऊओं की इतनी सेवा करते हो ! हमें तो गाय का गोबर भी मयस्सर नहीं । गिरस्त के घर में एक गाय भी न हो, तो कितनी लज्जा की बात है ।''

होरी बातचीत के दौरान भोला की प्रशंसा कर देता है । वह भोला को उसकी सगाई करा देने का झूठा आश्वासन देता है । भोला खुश होकर होरी को एक कजरी गाय अस्सी रुपये में, वह भी उधार पर देने को राजी हो गया ।

वह होरी के हाथ में गाय की पगहिया देकर गाय उसके घर तक पहुँचा देने को कहता है । वह गो-सेवा को परम धर्म मानने वाले के हाथ में गाय बेचने को उचित मानता है । वह होरी से कहता है - '' हाकिमों को गऊ की सेवा से क्या मतलब ? वह तो खून चूसना -भर जानते हैं । जब तक दूध देती, रखते, फिर किसी के हाथ बेच देते । किनके पल्ले पड़ती, कौन जाने । रुपया ही सब कुछ नहीं है भैया । कुछ अपना धरम भी तो है । तुम्हारे घर आराम से रहेगी तो ।''

होरी को जब मालूम हुआ कि भोला के पास भूसा नहीं है । वह आर्थिक संकट में है, तब होरी संकट की चीज लेने को पाप मान कर फिर कभी गाय लेने का वादा करके भोला से गाय नहीं लेता । वहाँ से जाने के समय होरी पीछे मुड़कर देखता है कि कबरी गाय पूँछ से मक्खियाँ उड़ाती सिर हिलाती, मस्तानी, मंद गति से झुमती चली जाती थी । जैसे बांदियों के बीच में कोई रानी हो । होरी कल्पना करता है - कैसा शुभ होगा वह दिन जब यह कामधेनु उसके द्वार पर बंधेगी ।

घर पर चर्चा होती है तो गोबर कहता है -'' साफ-साफ तो बात है अस्सी रुपये की गाय है, हमसे बीस रुपये का भूसा ले लें और गाय हमें दे दें । साठ रुपये रह जाएँगे, वह हम धीरे-धीरे दे देंगे ।''

होरी सोचता है कि -मैंने ऐसी चाल सोची है कि गाय सेंत-सेंत में हाथ आ जाए । कहीं भोला की सगाई ठीक करनी है बस । दो-चार मन भूसा तो खाली अपना रंग जमाने को देता हूँ ।

गोबर भोला की गाय देखकर कैसा खुश हो जाता है उसका वर्णन लेखक ने किया गोबर की आँख उसी गाय पर लगी हुई थी और मन ही मन वह मुग्ध हुआ जाता था । गाय इतनी सुन्दर और सुडौल है । इसकी उसने कल्पना भी न की थी ।

गोबर होरी से नांद गाड़ने कह कर गाय लाने चला जाता है । गोबर के लौटने में देर होती है तो वह बेचैन हो जाता है । गाय के आने से पहले होरी नांद गाड़ना नहीं चाहता । उसे आशंका है कि अगर भोला बदल जाएगा तो सारा गाँव तालियाँ पीटने लगेगा । रूपा चाहती है कि गाय आ जाएगी तो वह गोबर थापेगी और दूध दुहेगी । दूर से भैया को गाय लाते हुए देखकर सोना और रूपा दोनों दौड़ी हुई

Scanned by TapScanner

आकर सभी को यह सूचना देती हैं । किसने पहले भैया को देखा । इस पर दोनों बहनों में झगड़ा हो जाता है ।

गाय पहुँचती है तो होरी जल्दी नांद गाड़ना चाहता है । धनिया आटा और गुड़ घोलकर गाय को पिलाना चाहती है । क्योंकि गाय धूप में चलकर आने से प्यासी हो गई होगी । गाय को कहीं नजर न लग जाए इसलिए धनिया दुकान से काला डोरा मंगवाकर उसके गले में बांधना चाहती है । वह घर में कहीं पड़ी हुई घंटी भी ढूंढती है । गाय लेकर गोबर आता है तो उसके पीछे गाँव के लड़के चले आते हैं । दौड़कर गाय के गले से लिपट जाता है । धनिया देर न करके एक पुरानी साड़ी का काला किनारा फाड़कर गाय के गले में बाँध देती है । दूसरों की नजर न लगे , इसलिए धनिया आँगन में नांद गाड़ा जाना चाहती है । होरी नांद बाहर गाड़ना चाहता है । वह चाहता है कि गाय को द्वार पर बाँधे देखकर लोग पूछें कि यह किसका घर है । आखिर नांद आँगन में गाड़ी जाती है ।

होरी श्रद्धा से गाय को देख रहा है । वह मानता है कि यह गाय नहीं मानो साक्षात देवी ने घर में पदार्पण किया हो । गाय के चरणों से घर पवित्र हो गया । यह सौभाग्य बड़े पुण्य-प्रताप से मिला है । उसके लिए गाय केवल श्रद्धा -भक्ति की वस्तु नहीं । सजीव संपत्ति भी है ।

गाँव में अस्सी रुपए की गाय तो दूर -पचास -साठ रुपये की गाय का आना भी अभूतपूर्व बात थी । सब दौड़कर गाय देखने आते हैं । पंडित दातादीन गाय के सींग, थन, पुट्ठा देखकर गाय के लक्षण अच्छा बताते हैं । वे होरी से कहते हैं -''भगवान चाहेंगे तो तुम्हारे भाग्य खुल जाएँगे ।''

गाय के देखने होरी के दो भाई हीरा और शोभा नहीं आते तो होरी दोनों को बुलाकर गाय दिखाना चाहता है । हीरा गाय को देखकर जलता है । होरी हीरा और शोभा की बातचीत सुनकर हीरा के मन की दुर्भावना को जान जाता है । वह अब गाय को लौटा देने का निश्चय करता है । होरी और गोबर गाय के आधी-आधी रोटियाँ खिलाने आते हैं, पर गाय नहीं खाती । रूपा गाय का मुँह सहलाती है ।

झींगुरी सिंह होरी की गाय पर नजर रखता है । एक दिन होरी कर्जा लेने झींगुरीसिंह के पास पहुँचता है तो वह उसे सुनहला मौका जानकर उसके गाय बेच देने का प्रस्ताव देता है । गाय बेचने की बात सुनकर सोना कहती है कि मुझे बेच दो, पैसे ज्यादा मिल जाएँगे ।

होरी जानता है कि रूपा गाय को बहुत चाहती है । होरी यह भी समझता है कि एक मित्र से उधार पर गाय लेकर उसे बेच देना अधर्म है । पर परिस्थिति के सामने वह लाचार हो जाता है । किसी भी तरह होरी धनिया और गोबर को गाय बेचने को राजी करा देता है और तय होता है कि दोनों लड़कियाँ रात को सो जाने के बाद गाय को झींगुरी सिंह के पास पहुँचा दिया जाएगा ।

वह रात को जाकर गाय के पास खड़ा होता है तो उसे लगता है कि गाय की आँखों में आँसू भरे

Scanned by TapScanner

हुए हैं । गाय उसे याद दिला देती है कि उसने गाय न बेचने का वचन दिया था । होरी फिर निश्चय कर लेता है किसी भी हालत में वह गाय नहीं बेचेगा । यह सुन धनिया खुश हो जाती है ।

भीतर बड़ी उमस हो रही थी । गाय को आराम पहुँचाने के लिए होरी उसे बाहर बांध देता है । फिर अपने भाई शोभा से मिलने जाता है । कोई ग्यारह बजे लौटते समय वह गाय के पास हीरा को देखता है । वह गाय को जहर खिला देता है । गाय मर जाती है । गाय का कर्जा उतर नहीं पाता । होरी की फिर गाय खरीदने की सामर्थ्य नहीं रहती ; तमन्ना अधूरी रह जाती है ।

रूपा पति रामसेवक के घर पर गायों को देखती है तो उसकी स्मृति फिर सजीव हो जाती है - उस गाय की याद अभी भी उसके दिल में हरी थी, जो मेहमान की तरह आई थी और सबको रोता छोड़कर चली गई थी ।

होरी अपने पोते के दूध के लिए एक गाय लेना चाहता है । वह किसान की मर्यादा छोड़कर मजदूरी करता है । वह कहता है - ठेकेदार से रुपये मिले और गाय लाया ।

मृत्यु के समय भी होरी को गाय याद आती है । वह कल्पना से देखता है एक कामधेनु -सी गाय उसके सामने आ जाती है । उसका दूध दुहकर मंगल को पिलाते समय गाय एक देवी बन जाती है । धनिया के पुकारने पर वह अर्धचेतन अवस्था में कहता है - तुम आ गए गोबर ! मैंने मंगल के लिए गाय ले ली है । वह खड़ी है देखो ।

होरी धनिया से कहता है - मेरा कहा-सुना माफ कर देना धनिया । अब जाता हूँ । गाय की लालसा मन में ही रह गई । अब तो गाय के रुपये क्रिया-करम में जाएँगे ।

होरी की मरणासन्न स्थिति में हीरा रोते हुए कहता है -'' भाभी ! दिल कड़ा करो । गो-दान करा दो । दादा चले ।'' बहुत से लोग यही सुझाव देते हैं - हाँ गोदान करा दो यही समय है ।

धनिया सुतली बेचने से मिले बीस आने पैसे लाई और उसे पति के ठंडे हाथ में रखकर सामने खड़े दातादीन से बोलती है -''महाराज ! घर में न गाय है, न बछिया, न पैसा । यही पैसे हैं । यही इनका गो-दान है ।''

निर्धनता, अंध-विश्वास, धार्मिक भय और शोषण सब मिलकर होरी की एक गाय रखने की कामना को अपूर्ण रख देते हैं । होरी जीवन भर जुझारू योद्धा की तरह जीवन -संग्राम में लड़कर अंत में काल के गाल में समा गया है ।

1.5. गाँव का सामाजिक जीवन/शोषण :

गोदान में शहरी समाज और ग्रामीण सामाज का चित्रण किया गया है । शहर के संदर्भ में

Scanned by TapScanner

सत्याग्रह-संग्राम, शक्कर मिल, पत्रिका -प्रकाशन, कौन्सिल के चुनाव, हिज ऐक्सेलेन्सी गवर्नर, अंग्रेज सरकार से पदक प्राप्ति, शेयर खरीद -बिक्री, समाज -सेवा, महिलाओं की व्यायामशाला, वीमेन्स लीग, मजदूर आंदोलन आदि बातों की चर्चा होती है । पर प्रेमचन्द का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण वातावरण में पले किसान की सामाजिक स्थिति को उजागर करके कर्ज, धर्म, जाति, भाग्य की आड़ में उनके प्रति हो रहे शोषण का एक नग्न चित्र प्रदर्शन करना था ।

गाँव के भाग्य की डोर शहर में है । जमींदार अमरपाल सिंह के कारण शहरी और ग्रामीण कथाएँ जुड़ती है । जमींदारी प्रथा ही गाँव की आर्थिक स्थिति नियंत्रण करती है । होरी ग्रामीण किसान के प्रतिनिधि के रूप में उपस्थित होता है ।

उपन्यास में पहले होरी जमींदार की खुशामद करने अपना कुशल मानता है । वह जानता है कि जब दूसरे के पांव तले अपनी गर्दन दबी हुई है, तो उन पांवों को सहलाने में ही कुशल है ।

समय-समय पर जमींदार की डांड, बेगार, दस्तूरी, शगुन और नजराने के रूप में पैसे देने पड़ते हैं । रायसाहब के घर पर उत्सव है तो मजदूर बेगार करते हैं । होरी को पांच रूपये नजराना देने हैं । यही परंपरा है । रामसेवक कहता है -''यहाँ तो जो किसान है, वह सबका नरम चारा है । पटवारी का नजराना और दस्तूरी न दे तो गाँव में रहना मुश्किल । जमींदार के चपरासी और कारिदों के पेट न भरे तो निबाह न हो ।''

गाँव में थानेदार दारोगा ऊधम मचाते हैं । वे गाँव में आते हैं तो गाँववालों का कर्त्तव्य है कि वे उनका आदर -सत्कार करें । इसकी अवहेलना होने से गाँव का गाँव बंध जाएगा ।

हीरा पर हुए गोहत्या मामला को समाप्त करने के लिए होरी को तीस रुपए रिश्वत देने की नौबत आती है । गाँव के मुखिया दातादीन झिंगुरी सिंह, नोखेराम और लाला पटेश्वरी बिचौलिए बनते हैं । वे दरोगा मिलकर यह रिश्वत तय करते हैं । रिश्वत का आधा हिस्सा दरोगा और आधा हिस्सा चार मुखिया लेने पर समझौता होता है । झिंगुरी सिंह होरी को कर्जा देता है । यह रिशव्त देने से पहले धनिया पैसा होरी से छीन लेती है । लेकिन दरोगा महाजनों को तलाशी की धमकी देकर उनसे रिश्वत ले लेता है ।

होरी अपने घर पर ब्याहता न होते हुए भी गर्भवती बहू झुनिया को रख लेने से पंचायत बैठती है । होरी पर सौ रुपये नकद और तीस मन अनाज डाँड लगाया जाता है । बहू को पटेश्वरी हरजाई कहता है ।

डाँड लगानेवालों में झिंगूरी सिंह है । जिनकी दो जवान पत्नियाँ घूँघट की आड़ में सब कुछ गलत काम करती थी । ठाकुरसाहब के डर से कोई कुछ नहीं करता था ।

Scanned by TapScanner

धनिया पंचायत को डांटती है अभिशाप देती है । पर बिरादरी के भय से धर्म की रक्षा के लिए होरी डाँड भरता है ।

होरी रुपयों के लिए घर गिरवी रखता है और हाल में पैदा हुआ अनाज डाँड में दे देता है । उसे बिरादरी का भय था । लेखक ने लिखा है - ''बिरादरी का वह आतंक था कि अपने सिर पर लादकर अनाज ढो रहा था । मानो अपने हाथ अपनी कब्र खोद रहा हो । जमींदार साहूकार, सरकार किसका इतना रौब था । कल बाल-बच्चे क्या खाएँगे, इसकी चिंता प्राणों को सोख लेती थी ; पर बिरादरी का भय पिशाच की भाँति सिर पर सवार आंकुस दिये जा रहा था ।

गोबर दातादीन को अदालत की धमकी देकर ऊँची दर से ब्याज न देने की चेतावनी देता है । दातादीन अदालत में न जाकर ब्राह्मणत्व और धर्म के बल पर पूरे रुपये वसूल करना चाहता है । झिंगुरी सिंह कानून के बारे में कहता है -''कानून और न्याय उसका है, जिसके पास पैसा हो ।''

ब्राह्मण की अपनी जजमानी में अपना कुशल मानते हैं । दातादीन कहते हैं -''जमींदारी मिट जाए, बंकघर टूट जाए, लेकिन जजमानी अंत तक बनी रहेगी ।''

रायसाहब दोहरी नीति अपनाकर कभी जमींदारी को बुरी प्रथा मानकर उसकी निन्दा करते हैं तो कभी अपनी मजबूरी बताते हैं - ''हम बिच्छू नहीं हैं कि अनायास ही सबको डंक मारते फिरें । न गरीबों का गला दबाना कोई बड़े आनन्द का काम है । परंतु करें क्या । अफसरों को दावत कहाँ से दूँ, सरकारी चंदे कहाँ से दूँ ? ... आएगा तो असामियों के ही घर से ।'' वे कहते हैं कि अफसरों को डालियाँ न देने से जेल हो जाएगा । राय साहब स्वार्थी और अवसरवादी हैं ।

रायसाहब का शोषण किसी के ध्यान में नहीं जाता । सारा दोष कारिंदों पर मढ़ दिया जाता है । लेकिन राय साहब ऐसे समय में बकाया लगान वसूल करना चाहते हैं, जब उन्हें लगता है कि किसान लगान दे नहीं सकेंगे । तब बेदखली का डर दिखाते हैं फिर भी होरी कहता है -''राय साहब को क्या दोष दें, भाग्य का खेल है ।''

होरी अपनी बदहाली के लिए पूर्वजन्म के कर्मफल पर विश्वास करता है । गोबर का कथन कि भगवान ने सभी को बराबर करके जन्म दिया है, होरी के गले से नीचे नहीं उतरता । होरी परंपरागत मान्यता से मुक्त नहीं हो पाता, इसलिए उसका चौतरफा शोषण होता है और इस शोषण का विरोध करने की आवाज उसमें नहीं है । वह ऐसी गरीबी झेलता है कि पत्नी को, बेटियों का तन ढकने के लिए वस्त्र दे नहीं पाता । दो बेर भोजन उनके लिए जुटा नहीं पाता ।

समाज में जाति व्यवस्था इतनी उत्कृष्ट है कि उससे मुक्ति मिलना मुश्किल है । मातादीन सिलिया चमारिन को भोग लालसा से रखैल के रूप में रखता है । पर उसके हाथ का बनाया हुआ खाना नहीं खाता । इससे उसे विश्वास है कि उसका ब्राह्मणत्व सुरक्षित है । उसके मुँह में चमार हड्डी डाल

Scanned by TapScanner

देते हैं तो वह जातिभ्रष्ट हो जाता है । फिर काशी जाकर प्रायश्चित करके पुन: ब्राह्मणत्व वापस पा जाता है । पर अंत में उसका हृदय परिवर्तन हो जाता है । जिस सिलिया को उसने घर से निकाल दिया था, उसे तथा उसके बच्चे को पुन: स्वीकार करके चमार बने रहने को पसंद करता है ।

होरी को अपनी किसानी पर गर्व है । वह अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए रायसाहब से अच्छा संबंध बनाए रखता है । किसान से मजदूर बन जाने में वह अपनी बेइज्जती समझता है । किसान के रूप में रहने के लिए वह कड़ी मेहनत करता है । लगान बेबाक नहीं हो पाता । ऋण - भार नहीं उतरता । थोड़ा फायदा पाने की लालसा से वह भाइयों के साथ बेइमानी करके बीच में कुछ दलाली के रुपये लेना चाहता है । अपनी छोटी बेटी रूपा को दो सौ रुपये में बेच कर एक अधेड़ रामसेवक के साथ विवाह कर देता है । वह गाय खरीदने की लालसा से कंकड़ तोड़ने के लिए मजदूर बन जाता है । वह अपनी जमीन को सही सलामत बचाने का प्रयास करता है । लेखक उसकी एक दर्दनाक तस्वीर इस प्रकार खींचते हैं - हारे हुए महीप की भाँति उसने अपने को इन तीन बीघे के किले में बंद कर लिया था और उसे प्राणों की तरह बचा रहा था । फाके सहे, बदनाम हुआ, मजदूरी की, पर किले को हाथ से न जाने दिया, मगर अब वह किला भी हाथ से निकला जाता था । ... कहीं से रुपये मिलने की आशा न थी । जमीन उसके हाथ से निकल जाएगी और उसके जीवन के बाकी दिन मजूरी करने में कटेंगे । भगवान की इच्छा ।

महाजन, पुरोहित, जमींदार, शासन -तंत्र उस पर चौतरफा आक्रमण करते हैं । होरी धनिया का भगीरथ - प्रयास निष्फल जाता है । जीवन -संग्राम में निरंतर हार उसे दबोच लेती है । फिर भी संग्राम में वह हारनेवाला योद्धा नहीं है । हार में भी उसकी विजय होती है । भाइयों में अलगोझा हो जाना, अपने भाई की खुशहाली और संपन्नता से ईर्ष्यालु होकर गोहत्या तक अपराध कर बैठना, धर्म और बिरादरी के भय से गाँव से भाग जाना, फिर अंत में भाई से क्षमा मांगकर अपने मन को हल्का करना हीरा की नियति है ।

चाहे शहर की पार्टियों में हो, चाहे गाँव के भोज में शराब का खुलकर इस्तेमाल होता है ।

मिर्जा खुर्शीद वेश्याओं का उद्धार करने के लिए संगीत मंडली बनाते हैं । इस पर मेहता कहते हैं -'' जब तक समाज की व्यवस्था ऊपर से नीचे तक बदल न डाली जाय, इस तरह की मंडली से कोई फायदा न होगा ।

राय साहब की पुत्री मीनाक्षी का अपने पति से नहीं पटना । वह क्लब जाती है, पति पर गुजारे का दावा करती है, पति के घर पर आकर हंटर से उसकी पिटाई करती है ।

यौन - शोषण :

Scanned by TapScanner

नारी में आत्मविश्वास और आत्मसम्मान की कमी अपने स्वाभिमान के प्रति निराशाजनक दृष्टिकोण, पुरुषवर्चस्व समाज, ऊँची जाति का छोटी जाति की स्त्रियों के साथ गलत यौन -संबंध रखने में अपना अधिकार भावना और दंभ , छोटी जाति में अपनी इज्जत बनाए रखने के लिए आवश्यक दृढ़ता का अभाव, गरीबी की मजबूरियाँ आदि कई कारण हैं, जिनके परिणाम -स्वरूप यौन-शोषण की परंपरा चलती आ रही है ।

झुनिया के साथ यौन -शोषण होने के दो अवसर दिखाए गए हैं । वह बहुत सरल है, इसलिए पहली मुलाकात में प्रेमी गोबर को बताती है कि घर में घरवाली की अनुपस्थिति में तिलक -मुद्रा लगाने वाले एक पंडित ने किवाड़ बंद करके उसकी बेइज्जती करने की कोशिश की तो झुनिया उनको गालियाँ देकर, पीठ में दो लातें जमाकर भाग आई थी ।

एक दिन मातादीन होरी के घर पर आकर एकांत का फायदा उठाकर झुनिया से चिकनी-चुपड़ी बातें करता है । झुनिया असहायता का बोध करके रोने लगती है । मातादीन धीरे से उसका हाथ पकड़ लेता है, पर झटके से हाथ न छुड़ाकर दो चांटे न लगाकर वह आहिस्ता से हाथ छुड़ाती है । इस समय सोना के पहुँच जाने से 'मातादीन पगहिया मांग रहे थे' कहकर झुनिया स्थिति को संभाल देती है ।

झुनिया को दूध लेकर बाजार जाते रहते समय भिन्न -भिन्न लोगों से मुलाकात होती थी । कोई उसकी छाती पर हाथ रखकर न तरसाने की विनती करता था तो कोई रुपये, गहने दिखाकर फँसाना चाहता था । लगता है ये साधारण घटनाएँ जैसी थीं, वरन् इससे थोड़ी देर के लिए मनोरंजन हो जाता था । इसे झुनिया मंगनी चीज मानती थी । गाँवों में उत्पीड़न वर्ग निम्न जाति का यौन -शोषण करते हैं और इसे अपना अधिकार मानते हैं । इस अपराध के लिए वे समाज में दंडित नहीं होते । सरकार बहादुर के नौकर पटेश्वरी अपनी विधवा कहारिन को रखा हुआ है ।

रायसाहब का कारिंदा नोखेराम भोला की असहायता का फायदा उठाकर उसे काम दे देता है और उसकी नई पत्नी नोहरी को अपने घर रख लेता है ।

झिंगुरी सिंह, पटेश्वरी और नोखेराम के बेटे जब दशहरे की छुट्टी पर गाँव आते हैं, तब छैले बनकर घूमते हैं । होरी की बेटी सोना को देखने के लिए होरी के द्वार को ताकते हुए निकलते हैं ।

परंपरागत मानसिकता के कारण दलित समाज की अस्मिता और अस्तित्व के प्रति सचेतनता खतरे में पड़ जाती है । भाग्यवाद और कर्मफल विद्रोह का गला घोंट देते हैं ।

नारी उत्पीड़न :

गरीब और निम्न परिवार में नारी को पीटकर पुरुष अपना गुस्सा उतारता है और अपने पौरुष की

Scanned by TapScanner

विजय मानता है । नारी इसका विरोध नहीं कर पाती । उसे कुछ गुस्सा आता है । सभी के सामने यह घटना घटने से अपमान बोध होता है, कुछ दिनों तक बातचीत बंद हो जाती है, पर कुछ समय या दिन के पश्चात सारी बातें स्वभाविक हो जाती हैं । केवल ऐसी स्थिति में जमींदार के परिवार में तलाक तक पति-पत्नी उतर आते हैं, जैसे कि रायसाहब की पुत्री और दामाद के बीच हुआ । गरीब परिवार में पारिवारिक विघटन की स्थिति नहीं आती ।

गोबर ने शहर जाते समय दंपति को आपस में झगड़ते हुए देखा । पति पत्नी को घर जाने को कह रहा था । पत्नी मना कर रही थी । पति गुस्से से पत्नी को घसीटता है । गोबर पति का पक्ष लेता है तो पत्नी कहती है - तुम क्यों लड़ाई करने पर उतारू हो जी, अपनी राह क्यों नहीं जाते ? यहाँ कोई तमाशा है ? हमारा आपस का झगड़ा है । कभी वह मुझे मारता है, कभी मैं उसे डाँटती हूँ । तुमसे मतलब ?

बाँस बेचे जाते समय दमड़ी बंसीर से पुनिया झगड़ती है । हीरा -पुनिया के बीच मारपीट हो जाती है । वह कभी -कभी उसे इतना मारता है कि वह कई दिनों तक खाट से उठ नहीं पाती । उसने झगड़ा करके भाइयों में अलगौझा कर दिया था । पिटे जाने पर भी वह हीरा को अपने इशारे पर चलाती थी । गोबर -झुनिया में झगड़ा होता है । कुछ दिन दोनों में अबोला रह जाता है । पर विपत्ति के समय सब धुल जाता है ।

होरी आवेश के कारण धनिया को पीटता है । धनिया को बड़ा दु:ख होता है कि सभी के सामने होरी ने उसे पीटा । बातचीत बंद हो जाती है, पर दुर्दिन में, रोग में यह झगड़ा याद नहीं रहता । नारी पति सेवा में लीन हो जाती है ।

मातादीन -सिलिया का झगड़ा, मारपीट कर घर से निकाल देना, आपस में समझौता कर देना गाँव में स्वाभाविक प्रक्रिया है । ग्रामीण महिलाएँ अवहेलना, अपमान और उत्पीड़न को चुपचाप सह जाती हैं । वे पुरुष के अधीन रहती हैं । यह उनकी नियति है । मुक्ति नहीं । आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से वे बंदी हैं ।

ऋण समस्या :

गोदान में ऋण -समस्या एक प्रमुख समस्या है । यह समस्या होरी के जीवन की गति को बदनसीबी की ओर धकेलकर उसका अंत कर देती है । यह समस्या ग्रामीण कृषक -समाज की समस्या नहीं है, बल्कि शहर के जमींदारों और बुद्धिजीवियों की भी समस्या है । साहूकार और बैंकर ऋण देते हैं ।

Scanned by TapScanner

होरी ऋण-भार से इतना दबा हुआ है कि जवानी में भी उसे बुढ़ापा आ गया है । बड़ी मुश्किल से ऋण के पाटों के बीच वह गृहस्थी की गाड़ी खींचने का प्रयास कर रहा है ।

वह ऋण पर गाय लेता है । गाय को मार दिया जाता है तो उस पर कहर टूट पड़ता है । घर की तलाशी से बचने के लिए उसे रिश्वत देनी पड़ती है । रिश्वत के लिए ऋण भी लेना पड़ता है, पर धनिया के कारण स्थिति सुधरती है । पर वह किसान से मजदूर बनता है, कन्या-बिक्री करनी पड़ती है और अंत में प्राणों की आहुति दे देता है ।

गोबर शहर जाकर पहले दूसरे को ऋण तो देता है पर उसकी आर्थिक स्थिति बाद में बिगड़ जाती है तो वह ऋण चक्र में फंस जाता है और ध्वस्त हो जाता है ।

उसकी पत्नी धनिया समझ गई है कि चाहे कितनी कतरव्योंत करो, कितना ही पेट-तन काटो, चाहे एक-एक कौड़ी को दाँत से पकड़ो, मगर लगान -बेबाक होना मुश्किल है । ऋण भार से उसके बाल पक गए हैं । सिर्फ छत्तीस साल की उम्र में देह पर झुरियाँ पड़ गई हैं ।

शहर में रायसाहब ऋण लेकर अपनी प्रतिष्ठा बचाते हैं । वे कर्ज लेकर चुनाव लड़ते हैं । रायसाहब रुपयों की कमी के कारण एक बार मि. तंखा और एक बार मि. ओंकारनाथ की भी मिन्नत कर चुके हैं ।

कुंवर दिग्विजय सिंह और राजा सूर्यप्रताप पर भी भारी कर्ज है । तंखा, मि. खन्ना, मेहता, मालती के पिता कोई भी ऋण से मुक्त नहीं हैं ।

मालती के पिता कहीं से कुछ न मिलता था तो एक महाजन से अपने बंगले पर प्रोनोट लिखकर हजार -दो हजार ले लेते थे । महाजन उनका पुराना मित्र था, जिसने उनकी बदौलत लेन-देन में लाखों कमाए थे । पर पचीस हजार का कर्ज चढ़ चुका था । गाँववाले ईख बेचने मिल में पहुँचते हैं तो मुनिम से मिलकर गाँव का महाजन झिंगुरी सिंह कर्ज में दिया रुपये वसूल कर लिए क्योंकि जिस खन्ना बाबू की मिल है उसी खन्ना बाबू की महाजनी कोठी भी है । दोनों एक हैं । गाँव में साहूकार किसानों का शोषण करते हैं । दातादीन बिना लिखा-पढ़ी के ऋण देता है । वह रुपए वसूल करते समय ब्राह्मणत्व और शाप की धमकी देकर काम निकाल लेता है ।

दातादीन ने होरी को तीस रुपए आलू बोने के लिए ऋण दिया । आठ-नौ साल में वह सौ हो गए । गोबर एक रुपए के हिसाब से ज्यादा ब्याज देने की बात कहता है ।

दातादीन अदालत में जाने से डरता है । पर धमकाता है - मैं ब्राह्मण हूँ । मेरे रुपये हजम करके तुम चैन न पाओगे ।

होली के अवसर पर गाँव में जो नाटक खेला जाता है, उसमें दिखाया जाता है कि ठाकुर दस

Scanned by TapScanner

रुपये का दस्तावेज लिखाकर पांच रुपये देता है । वे एक रुपए नजराने का, एक तहरीर का, एक कागद का, एक दस्तूरी का और सूद का काट लेते हैं ।

किसान उसी पांच रुपए को लौटाकर कहता है - छोटी ठकुराइन के नजराने और पान खाने के लिए एक-एक रुपया, बड़ी ठकुराइन के नजराने और पान खाने के लिए एक-एक रुपया और अपने क्रिया कर्म के लिए बाकी एक रुपया रख लीजिए ।

यह साहूकारों के चरित्र पर एक व्यंग्य दर्शाता है ।

नोहरी भी कुछ रुपये जमा करती है जो उसे किसी को कर्जा देना चाहती है । उसे होरी अच्छा देनदार लगता है । होरी को सोना के विवाह में दिल खोलकर खर्च करने को उकसाकर दो सौ रुपए कर्जा देती है ।

दुलारी सहुकारिन भी कर्जा देती है । गाँव में ऐसा कोई घर न था , जिस पर आपके कुछ रुपए न आते हों । झिंगुरी सिंह पर भी उसके बीस रुपए आते थे । होरी ने उससे चालीस रुपए लिए थे , जो ब्याज सहित लगभग सौ रुपए हो गए थे । कारिंदा नोखेराम बिना रसीद दिए लगान के पैसे ले लेते हैं । गोबर जब उससे गंगाजलि उठवाकर अदालत में दोबारा पैसे देने की धमकी देता है तो वह सीधे रास्ते पर आता है ।

दातादीन जब बताता है कि सरकार महाजनों से सूद का दर घटाने को कहेगी तब झिंगुरी सिंह कहता है -''पंडित मैं तो एक बात जानता हूँ, तुम्हें गरज पड़ेगी तो सौ बार हमसे रुपये उधार लेने आओगे, और हम जो ब्याज चाहेंगे, लेंगे । वह सौ में पचीस पहले काट लेने की बात कहता है । महाजन लात और जूते से बात करते हैं । प्रौढ़ आदमियों को कुछ फायदा देकर अपने पक्ष में लेकर दूसरों की गर्दन दबाने का तरीका बताकर वह साहूकारों की कलई खोल देते हैं ।

होरी जब कहता है कि हमने जिस ब्याज पर रुपए लिए, वह तो देने ही पड़ेंगे । फिर ब्राह्मण ठहरे । यह सुनकर गोबर कहता है - ''और कौन यह कह रहा है कि ब्राह्मण का पैसा दबा लो ! मैं तो यही कहता हूँ कि इतना सूद नहीं देंगे । बैंकवाले बारह आने सूद लेते हैं । तुम एक रुपया ले लो । और क्या किसी को लूट लोगे ?

वह पिता से दातादीन के बारे में कहता है -'' किसी को सौ रुपए उधार दिए और उससे सूद में जिन्दगी भर काम लेते रहे । मूल ज्यों का त्यों । यह महाजनी नहीं है, खून चूसना है ।''

होरी ने मंगरू शाह से पांच साल पहले साठ रुपए कर्ज लिया था । सौ रुपए भी वह दे चुका था । पर उस पर साठ रुपए का कर्ज बना हुआ था ।

लगान और सूद के अलावा शोषक वर्ग किसानों का दूसरे ढंग से शोषण करते थे । किसानों को

Scanned by TapScanner

बेगार, नजराना, डाँड, दस्तूरी, शगुन आदि के रूप में रुपए देने पड़ते थे ।

पुलिस रिश्वत लेती थी । उसमें गाँव के मुखिया लोगों के साझे में यह काम चलता है ।

1.6. राष्ट्रीय आन्दोलन :

प्रेमचन्द ने राष्ट्रीय आंदोलन की घटनाओं के प्रति गोदान में विशेष रुचि नहीं दिखाई है । केवल सत्याग्रह संग्राम की चर्चा करके वे भारत में सुराज आने और एक समानता मूलक समाज -व्यवस्था लागू होने की ओर संकेत किया है । इसमें उन्होंने दिखाया है कि राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रति रुचि केवल शहरी पात्रों की है । ग्रामीण पात्र इससे प्रभावित नहीं हैं ।

केवल धनिया गाँव के मुखिया लोगों के षडयंत्र का पर्दापाश करती हुई कहती है -'' ये हत्यारे गाँव के मुखिया हैं । गरीबों का खून चूसनेवाले । सूद-ब्याज, डेढ़ी -सवाई, नजर-नजराना, घूस-घास जैसे भी हो, गरीबों को लूटो । उस पर सुराज चाहिए । जेल जाने से सुराज नहीं मिलेगा । सुराज मिलेगा धरम के न्याय से ।''

इस कथन के अलावा और किसी ग्रामीण पात्र के मुँह से सुराज की बात नहीं कही गई है ।

गोबर शहर जाकर कुछ बातें सीख जाता है, वह सभाओं में आते - जाते रहने से कुछ राजनीतिक ज्ञान हासिल कर लेता है । गाँव में आता है तो मुखिया लोगों के अन्याय का विरोध करने की हिम्मत करता है । होली के अवसर पर मुखिया का मखौल उड़ाता है । तब होरी सोचता है -''लड़के की अक्ल जैसे खुल गई है । कैसी बेलाग बात कहता है ।''

रायसाहब जमींदार होने के नाते सरकार और असामियों से अच्छा संबंध बनाए रखना चाहते थे । इसलिए पिछले सत्याग्रह संग्राम में रायसाहब ने बड़ा यश कमाया था । कौंसिल की मेम्बरी छोड़कर जेल चले गए थे । तब से उनके इलाके के असामियों को उनसे बड़ी श्रद्धा हो गई थी ।

इसके बावजूद हुकूमत से उनका कोई विरोध नहीं था । ''अपनी नजरें और डालियाँ और कर्मचारियों की दस्तूरियाँ जैसी अभी आती थीं ।'' उनकी दुरंगी नीति मेहता को अखरती है ।

मि. खन्ना भी जेल गए हैं । पर वे खद्दर नहीं पहनते । वे प्रेम से शराब पीते हैं । पर जेल में उन्होंने शराब नहीं छुई । जेल में 'ए' क्लास में रहकर भी 'सी' क्लास की रोटियाँ खाई । देशप्रेमी होने का विश्वास उत्पन्न करने में कोई कसर नहीं छोड़ी ।

मिस मालती भी एक बार जेल जाती है । वहाँ नगर कांग्रेस कमेटी की सभानेत्री चुनी जाती है ।

कुँवर नारायण लुकछिपकर राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेते हैं । फिर भी अधिकारियों को वह बात मालूम पड़ गई थी । फिर भी उनकी बड़ी प्रतिष्ठा थी । साल में एक-दो बार गवर्नर साहब भी उनके

Scanned by TapScanner

मेहमान हो जाते थे ।

मि.तंखा अपनी मित्र मंडली में कौंसिल की चर्चा करते हुए मालती से कौंसिल के लिए चुनाव लड़ने को कहते हैं । वे कहते हैं -''मेरी इच्छा केवल यह है कि कौंसिल में ऐसे लोग जाएँ जिन्होंने जीवन में कुछ अनुभव प्राप्त किया हो और जनता उपयुक्त उम्मीदवार मानती है तो मिर्जा खुर्शीद अपनी भावना व्यक्त करते हैं -'' मेरा बस चले तो कौंसिल में आग लगा दूँ । जिसे हम डेमोक्रेसी कहते हैं, वह व्यवहार में बड़े-बड़े पूँजीपतियों और जमींदारों का राज्य है और कुछ नहीं ।''

मि. तंखा राय साहब की प्रशंसा करते हुए कहते हैं -'' अबकी तो आपने कौंसिल में प्रश्नों की धूम मचा दी । मैं तो दावे के साथ कह सकता हूँ कि किसी मेंबर का रिकार्ड इतना शानदार नहीं है ।''

मि. तंखा दांव-पेच के आदमी थे । चुनाव के अवसर पर उम्मीदवारों को खड़ा करके उनके लिए काम करते थे और अपने लिए दस-बीस हजार कमा लेते थे ।

मिर्जा खुर्शीद हैट पहनते थे । वोटिंग के समय चौंक पड़ते थे और नेशनलिस्टों की तरफ से वोट देते थे ।

मालती बिजली के संपादक ओंकारनाथ से पूछती है -''तो आपके पत्र में विदेशी वस्तुओं के विज्ञापन क्यों होते हैं ? मैंने किसी भी दूसरे पत्र में इतने विदेशी विज्ञापन नहीं देखे । आप बनते तो हैं आदर्शवादी और सिद्धांतवादी, पर अपने फायदे के लिए देश का धन विदेशों में भेजते हुए आपको जरा भी खेद नहीं होता ।''

राय साहब को लगता है कि स्वतंत्र भारत में जमींदारी प्रथा का लोप हो जाएगा । पर वे अपनी दुहरी चाल में सफल होते हैं । एक तरफ असामियों को लूटते हैं, पर वे रायसाहब को अच्छा इन्सान समझते हैं । रायसाहब सत्याग्रह में भाग लेते हैं, उस तरफ अफसरों को डालियाँ डालते हैं ।

1.7 चरित्र -चित्रण:

❋ होरी :

होरी गोदान उपन्यास का नायक है । इसमें आदि से अंत तक होरी की दयनीय और संघर्ष पूर्ण गाथा कही गई है । वह भारतीय कृषक वर्ग का प्रतिनिधि है, जो सदैव शोषक-वर्ग के हाथों यातना सहने को मजबूर है ।

परिवार का मुखिया - बेलारी गाँव का होरी अपने परिवार का मुखिया है । उसके पास पांच बीघा जमीन है । पविार में बेटा गोबर, दो बेटियाँ सोना और रूपा तथा पत्नी धनिया हैं । वह कमर तोड़ मेहनत करके फसल उपजाता है । फिर भी उसे दो वक्त भरपेट भोजन नसीब नहीं होता । अपनी आवश्कयताओं को पूरा करने के लिए उसे समय - समय पर महाजनों से कर्ज लेना पड़ता है । हालांकि

Scanned by TapScanner

वह जानता है कि इस अंधी गली से छुटकारा पाना मुश्किल है, फिर भी परिस्थिति से लाचार बन जाता है ।

वह सोचता है कि अगर दोनों भाई अलग न हुए होते तो, आज उसके खेत में भी हल चल रहे होते । उसके बच्चों को दूध मिलता । धनिया की जवानी असमय न ढल गई होती ।

धनिया जब गोहत्या का दोष देकर हीरा की तौहीन करता है, तो भाई की इज्जत बचाने होरी बेटे के सिर पर हाथ रखकर सफेद झूठ बोल देता है । पुलिस की तलाशी लेने को वह घर की बेइज्जती समझता है । इसलिए कर्जा लेकर दरोगा को रिश्वत देने को तैयार हो जाता है ।

हीरा गाँव छोड़कर चला जाता है तो होरी उसकी खेती कमाता है । वह इसे अपना धर्म मानकर काम करता जाता है ।

बेटा भाग जाने पर भी बहू झु निया को अपने घर पर रखकर उसके कारण समाज में उठे बवंडर का मुकाबला करता है ।

वह कर्जा लेकर बड़ी बेटी सोना की शादी मथुरा से कर देता है और अभाव के समय बड़े अंतर्द्वंद्व के बाद वर पक्ष से दो सौ रुपये लेकर अधेड़ रामसेवक को देता है, लेकिन इस पैसे को कर्ज मानकर बाद में चुका देने की मानसिकता बना लेता है ।

गोबर के बेटे के लिए दूध जुटाने के लिए एक गाय खरीदना चाहता है । इसलिए कंकड़ तोड़ने का काम करता है । उसके दोनों भाइयों के अलग हो जाने पर भी होरी उनसे पहले की तरह सद्भावना रखता था । हीरा की पत्नी पुनिया को बहू मानता था, यद्यपि वह बहुत झगड़ालू स्वभाव की औरत थी ।

दमड़ी बँसौर चौधरी पुनिया को धक्का देता है तो होरी का खून खौल उठता है । वह चौधरी को एक लात जमाकर बोलता है - अब अपना भला चाहते हो चौधरी तो यहाँ से चले जाओ, नहीं तुम्हारी लाश उठेगी । तुमने अपने को समझा क्या है ? तुम्हारी इतनी मजाल कि मेरी बहू पर हाथ उठाओ ? अलग होने पर भी एक खून के होने से वह पुनिया के अपमान को अपना अपमान समझता है ।

वह भाई हीरा की सहायता करने के लिए पत्नी धनिया को छोड़ने को तैयार हो जाता है । वह सोचता है - धनिया से अब मेरा कोई संबंध नहीं, जहाँ चाहे जाए । वह जब इज्जत बिगाड़ने पर आ गई, तो इस घर में कैसे रह सकती है ।

खेती में पुनिया की सहायता करने पर भी होरी की बदनामी होती है कि उसने उसकी सारी उपज अपने घर ले ली है । एहसान के बदले कलंक लगने पर भी वह अपनी नेकनामी से मुँह नहीं मोड़ता । अपना कर्त्तव्य करता जाता है ।

Scanned by TapScanner

व्यवहारकुशल - होरी रायसाहब के यहाँ बराबर आता-जाता रहता है ताकि उनकी शुभ -दृष्टि उस पर बनी रहे । उनसे मिलने में वह गर्व का अनुभव करता रहता है । वह सोचता है - मालिकों से मिलते -जुलते रहने का ही तो यह प्रसाद है कि सब उसका आदर करते हैं, नहीं तो पांच बीघे के किसान की औकात क्या है ?

किसी भी समय जरूरत पड़ जाने पर कर्जा मिल सके, इसलिए वह महाजनों से अच्छा संबंध बनाए रखता है । वह साहूकारों से हँसी - मजाक करके कर्जे देनो को फुसलाता है । वह पटेश्वरी और साहूकार की खुशामद करता है तो वसूली के तकाजे नरम पड़ जाते हैं और पुराना कर्ज रहने पर भी नया कर्ज मिल जाता है । होरी रायसाहब के नाटक धनुष यज्ञ में माली की भूमिका में अभिनय करके सबको खुश कर देता है । वह पठान के वेष में आए मेहता को अपने काबू में इसलिए ले जाता है कि वह रायसाहब को सुरक्षा दे सके ।

गरीब - होरी बहुत गरीब है । गरीबी ने उसकी रीढ़ तोड़ दी है । दवादारु न हो सकने से उसके तीन लड़के बचपन में ही मर गए थे । उसके सोलह साल के लड़के गोबर के लिए दूध तक नहीं मिल सका था । लगभग चालीस साल की उम्र में उसके गिरते स्वास्थ्य की ओर संकेत करते हुए धनिया कहती है -तुम्हारी दशा देखकर मैं सूखी जाती हूँ कि भगवान यह बुढ़ापा कैसे कटेगा ? किसके द्वार पर भीख मांगेंगे । होरी कहता है - साठे तक पहुँचने की नौबत न आ पाएगी धनिया । इसके पहले ही चल देंगे ।

वह जब पुनिया के मटर के खेत की मेंड पर अपनी मडैया में रात को सोने जाता है, तो अपने साथ जन्म के पहले के कंबल और पांच साल पहले बनवाई गई फटी मिर्जई ले जाता है, फिर भी बुढ़ापे का साथी था विवाई के फटे पैरों को पेट में डाल कर और हाथों को जाँघों के बीच में दबाकर और कंवल से मुँह चिपाकर अपनी गर्म साँस से अपने को गर्म करने की चेष्टा करता है ।

किसान से मजदूर बन जाना उसके जीवन की सबसे बड़ी दर्दनाक मजबूरी थी । मातादीन के यहाँ वह मजदूरी करते समय उसकी झिड़कियाँ सहता है । वह काम करते समय बेहोश भी हो जाता है ।

ठेकेदार के यहाँ पत्थर की खुदाई करते समय उसे लू लग जाती है । जो उसके जीवन का अंत कर देती है । जीवन संघर्ष में बार-बार हारने के बावजूद वह हिम्मत नहीं हारता, बल्कि भाग्य से लड़ता रहता है ।

खेती की मर्यादा का रक्षक - होरी आदर्श कृषक है । हर हालत में किसानी को मर्यादाजनक कार्य मानता है । वह जानता है कि खेती करने से उसके एक दिन की मजदूरी एक आने से भी कम होती है । फिर भी अपनी मर्यादा को बनाए रखने के लिए वह खेती में डटकर रहना चाहता है ।

Scanned by TapScanner

उसके लिए संघर्ष करता है । वह पुत्र गोबर से कहता है - ''खेती में जो मरजाद है, वह नौकरी में नहीं है ।

भ्रातृप्रेम में महान – अलग हो जाने पर भी होरी अपने दोनों भाई हीरा और शोभा से प्रेम करता है । सब जब उसके घर पर गाय देखने आते हैं, वह चाहता है कि उसके दोनों भाई भी गाय देखने आ जाएँ । हीरा उस पर झूठा आरोप लगाता है कि उसने घर के पैसों का गबन किया है । हीरा उसकी गाय को मार डालता है, फिर भी भाई को बचाने के लिए वह कहता है - मेरा सुबहा किसी पर नहीं है, सरकार । गाय अपनी मौत से मरी है । बूढ़ी हो गई थी वह भाई के लिए झूठ बोलता है कि हीरा ने गाय को नहीं मारा । हीरा भाग जाता है तो वह दु:खी होता है । उसके परिवार का भार संभालता है । साढ़े पांच साल बाद जब हीरा लौटकर अपनी राम कहानी सुनाकर भाई से माफी मांगता है, तब होरी को बेहद खुशी होती है ।

उदार पिता – होरी एक आदर्श पिता है । वह हर समय बच्चों का खयाल रखता है । वह सोचता है -गोबर को यदि दूध मिल पाता तो कितना अच्छा जवान बन जाता । गोबर घर छोड़कर चला जाता है । अपने मन में पुत्र के प्रति कोई दुर्भावना नहीं है । वह नोहरी से दो सौ रुपये कर्जा लेकर सोना की शादी कर देता है । मजबूरी में दो सौ रुपये लेकर रामसेवक से रूपा की शादी कर देता है ।

सीधासादा आदमी – होरी स्वभाव से सरल है । वह छल-छेद की उड़ती हुई धूल से दूर रहता है । वह किसी के जलते हुए घर में हाथ सेंकना नहीं जानता । भोला के पास भूसा न होने की बात सुनकर बह बिदक जाता है । वह गाय की रस्सी भोला को लौटाते हुए कहता है - रुपया तो दादा मेरे पास नहीं । हाँ थोड़ा-सा भूसा बचा है । वह तुम्हें दूँगा । चलकर उठवा लो । भूसे के लिए तुम गाय बेचोगे और मैं लूँगा । मेरे हाथ न कट जायेंगे । अपने घर में भूसे की कमी होने के बावजूद वह भोला के घर पर तीन खौंचा भूसा पहुँचा देता है ।

यथार्थ चरित्र – समस्त गुण-दोषों को लेकर एक यथार्थ चरित्र के रूप में होरी पाठकों के सामने आता है । कुछ फायदों के लिए होरी सामान्य आदमी की तरह कुछ भूल कर बैठता है ।

वह भोला को सगाई का झूठा आश्वासन देकर गाय हथियाना चाहता है । फिर भी उसकी आत्मा उसे धिक्कारती है । वह कहता है -'' किसी भाई का नीलाम पर चढ़ा हुआ बैल लेने में जो पाप है, वह इस समय तुम्हारी गाय लेने में है । होरी समझता था कि संकट की चीज लेना पाप है ।

वह सोचता है कि अगर वह समय पर भोला के पैसे चुका नहीं सका, तो भोला तगादा करने आएगा, बिगड़ेगा, गालियाँ देगा । इससे उसे शर्म नहीं आएगी । उसे लगता है कि सिद्धि के लिए थोड़ा-सा छल करना जायज है । वह मानता है कि अपने पास कुछ पैसे होने पर भी महाजन से झूठ कहना, बेचते समय सन को गीला करना, रूई में बिनौले भरना आदि दरिद्रता की मजबूरियाँ हैं और ये बुरी बातें नहीं हैं ।

Scanned by TapScanner

होरी बाँस बेचते समय अपने भाई से ढाई रुपये की बेइमानी करने के लिए दमड़ी बंसोर से सांठ-गांठ कर लेता है । आखिर चौधरी वह दलाली के पैसे न देकर साढ़े सात रुपए होरी के हाथ थमाकर कहता है -''ढाई रुपये पर अपना ईमान बिगाड़ रहे थे । मुझे उपदेश देते हैं । अभी परदा खोल दूं तो सिर नीचा हो जाए । '' इस घटना से होरी बहुत पछताता है । वह कितना लोभी और स्वार्थी है, आज पता चला ।

खलिहान में जब सारा अनाज तुल जाता है, जमींदार और महाजन अपना हक ले जाने के बाद उसके पास केवल पांच सेर अनाज बचता है । इसलिए वह चुपके से रातोंरात भूसा छिपा लेता है ।

पुनिया पर हाथ उठाने से होरी चौधरी को लात मारता है पर खुद सभी के सामने धनिया को पीटता है । पर इससे उसे पश्चात्ताप है और वह मरते समय धनिया से माफी मांग लेता है ।

भोला को गाय के रुपए लौटाने में देर होने से वह गाली सहने को तैयार है, फिर सोचता है - जो आदमी ऊपर इतना विश्वास करे उससे दगा करना नीचता है । एक समय वह गोबर को आलसी मानता । है फिर कहता है कि इस उम्र में यह स्वाभाविक है ।

भाग्यवादी – होरी भाग्य और कर्म पर अखंड विश्वास रखता है । वह मानता है कि उसकी गरीबी और दु:ख -दुर्दशा सभी पूर्व जन्म के पाप का फल है । सब प्रकार का सुख -भोग रायसाहब के पूर्वजन्म के पुण्य का फल है । पाखंडी दातादीन का होरी इसलिए सम्मान करता है कि वह ब्राह्मण है । ब्याज की दर अधिक जानते हुए भी वह कर्जे की पाई-पाई चुका देना चाहता है । उसका दृढ़ विश्वास है कि ब्राह्मण का पैसा हरगिज नहीं पचेगा ।

वह ब्राह्मण और पंचों को ईश्वर के प्रतिनिधि मानकर उनके अनुचित फैसले को सिर झुका कर मान लेता है । इसलिए वह खलिहान का सारा अन्न दण्ड के रूप में दे देता है । वह कहता है ''पंच में परमेश्वर रहते हैं । उसका जो न्याय है वह सिर आँखों पर ।''

भोला जब उसके घर से बैल खोलकर ले जाने लगता है और सभी गाँववाले होरी के पक्ष में तर्क रखते हैं, तब होरी कहता है -''अगर तुम्हारा धर्म कहे तो बैल खोल लो ।'' सचमुच भोला बैल ले जाता है इसे भाग्य का विधान मानकर होरी सहने को विवश हो जाता है ।

वह बेटे गोबर को समझा देता है कि छोटे-बड़े भगवान के घर से बनकर आते हैं । संपत्ति बड़ी तपस्या से मिलती है ।

कर्ज के शोषण से घायल –कर्जा तो मुँह बाये होरी को निगल जाने को सतत तैयार रहता है । उसके साहूकार हैं - दातादीन, मंगरू, साहुआइन, नोहरी, रामस्वरूप । बिरादरी में नाक न कटे . इसलिए अपनी औकात के हिसाब से वह सामाजिक कार्यों में खर्च करता है । भाइयों से अलग होते

Scanned by TapScanner

समय उसने जो कर्जा लिया था, वह बढ़ता जाता है । उसने दातादीन से तीस रुपए लेकर आलू बोए थे । आलू चोर ले गए । अब कर्जा ब्याज सहित दो सौ रुपए हैं । वह सोचता है इस तरह सूद बढ़ता जाएगा तो उसका घर द्वार सब नीलाम हो जाएगा । वह मजदूरी से एक अधेड़ रामसेवक से रूपा की शादी करके दो सौ रुपये लेता है । उसे बाद में चुकाने को मन बना लेता है फिर भी इस कार्य से उसकी अंतरात्मा विलाप करती है ।

धर्म की मर्यादा का रक्षक – राय साहब गोचर के लिए चारागाह छोड़ देते हैं तो होरी उन्हें प्रजापालक मानता है ।

वह स्वयं धर्म की मर्यादा की रक्षा करने के लिए बहू झुनिया को घर में रखकर सारी कठिनाइयाँ झेलता है, पर उसे घर से निकालने को तैयार नहीं होता ।

बिरादरी की मर्यादा की रक्षा करने के लिए वह सारा गल्ला सिर पर ढोकर पंचों को दे देता है । वह मकान को गिरवी रखकर दंड भरता है ।

मातादीन जब सिलिया का परित्याग कर देता है, होरी उसे शरण देता है । वह मानवता का आँचल कभी नहीं छोड़ता, चाहे उसके लिए उसे कितनी ही विपत्ति क्यों न सहनी पड़े ।

होरी धनिया की फटकार सहता है । पुत्र का व्यंग्य -बाण सहता है । महाजन की गालियाँ, मालिक की धमकियाँ सब कुछ सहकर वीर योद्धा की तरह जीवन संग्राम में लड़ता है । अंत में वह मिट जाता है । उसकी हार हार नहीं है, कर्म के लिए प्रेरणा है । वह मर जाता है पर मरकर अमर हो जाता है । सामाजिक व्यवस्था और आर्थिक तंगी उसे मिलकर लहू-लुहान कर देती है । फिर भी एक कृषक के रूप में अपना अस्तित्व बनाए रखने में वह आप्राण प्रयास करता है ।

लेखक की राय में - जीवन के सारे संकट, सारी निराशाएँ, मानो उसके चरणों पर लोट रही थीं । कौन कहता, जीवन -संग्राम में वह हारा है । यह उल्लास, यह हर्ष, यह पुलक क्या हार के लक्षण हैं । इन्हीं हारों में उसकी विजय है । उसके टूटे -फूटे वस्त्र उसकी विजय पताकाएँ हैं ।

होरी अकेले में पलायनवादी लगता है, विरोधी मनोवृत्ति वाला लगता है, अपने निर्णय बदलते हुए दिखाई देता है । वह अपने -आप में अधूरा लगता है । पर उसके चरित्र को धनिया पूर्णता देती है । पति-पत्नी मिलकर वह पूर्ण व्यक्तित्व का प्रतिनिधित्व करते हैं ।

Scanned by TapScanner

✻ धनिया :

धनिया होरी की पत्नी है । गृहस्थ की भट्टी में सब कुछ झोंककर वह छत्तीस साल की उम्र में वृद्धा बन गई है । उसके सारे बाल पक गए हैं । चेहरे पर झुरियाँ पड़ गई हैं । सुन्दर गेहुंआ रंग सांवला हो गया है । आँखों को कम सूझता है ।

उसके तीन संतानों की मौत हो गई । अब बेटा गोबर सोलह साल, बारह साल की सोना और सात साल की रूपा है । उसका मन कहता है कि अगर दवादारु ठीक से होती तो वे बच जाते ।

साहसी – धनिया गरीब है, पर किसी से नहीं डरती । जो सही हो और जो मन में आए, वह उसे बे रोक टोक बोल देती है । उसे लोग मुँहजोर और लड़ाकू मानते थे । वह जब अपनी बात पर अड़ जाती है, तब सामाजिक बंधन की परवाह नहीं करती ।

पुत्र गोबर जब विधवा झुनिया को गर्भवती बनाकर शहर भाग जाता है, धनिया साहस दिखाकर झुनिया को अपने घर में रख लेती है । समाज के डर से उसे बाहर नहीं करती वरन् पुत्र की कायरता को धिक्कारती है । मातादीन जब अपनी रखैल चमारिन सिलिया को घर से निकाल देता है तब वह सिलिया को अपने घर में शरण देती है । गाय की ईर्ष्या करने वाले देवर हीरा के लिए करती है -सवेरा होते ही लाला को थाने नहीं पहुँचा दूँ तो असल बाप की नहीं ।

पुलिस दारोगा और पंच होरी से रिश्वत लेते समय धनिया अंगोछे को झटक देती है तो रुपये जमीन पर बिखर जाते हैं । वह नागिन की तरह फुफकारती है - अंजुरी भर रुपये लेकर चला है, इज्जत बचाने । ऐसी बड़ी है तेरी इज्जत । वह दारोगा की तलाशी की धमकी से नहीं डरती ।

दारोगा जब कहता है कि इस शैतान की खाला ने हीरा को फंसाने के लिए स्वयं जहर दिया है, तब धनिया इसका मुँह तोड़ जवाब देती है - हाँ दे दिया, अपनी गाय को मार डाला । तुम्हारी तहकीकात में यही निकलता है तो यही लिख दो । पहना दो मेरे हाथ में हथकड़ियाँ । देख लिया तुम्हारा न्याय और तुम्हारी अक्ल की दौड़ । वह ललकार कर कहती है -मैं दमड़ी भी नहीं दूंगी , चाहे मुझे हाकिम के इजलास तक ही चढ़ना पड़े ।

वह वहाँ के उपस्थित मुखिया, पटवारी, साहूकार किसी की परवाह नहीं करती । वह कहती है- यह हत्यारे गाँव के मुखिया हैं । गरीबों का खून चूसनेवाले सूद-ब्याज डेढ़ी-सवाई, नजर-नजराना, घूस-घास जैसे भी हो, गरीबों को लूटो । उस पर सुराज चाहिए । जेल जाने से सुराज न मिलेगा, सुराज मिलेगा धरम से, न्याय से । दरोगा धनिया को कहता है - औरत दिलेर है । दातादीन झुनिया को घर पर रखकर मुसीबत मोल न लेने का सुझाव देता है तो धनिया निर्भीकता से व्यंग्य कसती है - हमको कुल प्रतिष्ठा इतनी प्यारी नहीं है महाराज कि उसके पीछे एक जीव की हत्या कर डालते । वह उनसे कहती है

Scanned by TapScanner

जो काम बड़े-बड़े आदमी करते हैं उनसे कोई कुछ नहीं बोलता । उनको कलंक नहीं लगता । पर छोटे आदमी उसे करते हैं तो उनकी मर्यादा बिगड़ जाती है । उनकी नाक कट जाती है । पंचों के अन्याय और दंड का विरोध करते हुए धनिया कहती है - पंचो ! गरीब को सताकर सुख न पाओगे । इतना समझ लेना, हम तो मिट जाएँगे । कौन जाने इस गाँव में रहें, या न रहें, लेकिन मेरा सराप तुमको भी जरूर ही जरूर लगेगा ।

होरी डाँड स्वीकार करने को कहता है तो धनिया दाँत किटकिटाकर कहती है - मैं न एक दाना दूँगी न एक कौड़ी डाँड । जिसमें बूता है चलकर मुझसे ले ले ।

बिरादरी से निकाल दिए जाने की धमकी उस पर असर नहीं करती है । वह कहती है -''बिरादरी में रहकर हमारी मुकुत नहीं हो जाएगी । अब भी अपने पसीने की कमाई खाते हैं, तब भी अपने पसीने की कमाई खाएँगे । ''

होरी पंचों को सारे रुपये दे देता है तो धनिया उसको फटकारते हुए कहती है - न हुक्का खुलता तो हमारा क्या बिगड़ जाता । मेरे सामने बड़े बुद्धिमान बनते हो । बाहर तुम्हारा मुँह क्यों बन्द हो जाता है ? वह चाहती है कि होरी को पंचों के अन्याय का विरोध करके कहना था कि 'तुम कहाँ के बड़े-बड़े धर्मात्मा हो' जो दूसरों पर डाँड लगाते फिरते हो । तुम्हारा तो मुँह देखना भी पाप है ।'

वह पंचों को राक्षस मानती है । वे डाँड के बहाने गरीबों की जमीन -जायदाद छीन लेना चाहते हैं । वह पति को समझाती है - ''तुम इन पिशाचों से दया की आशा करते हो । सोचते हो दस-पांच मन निकालकर दे देंगे । मुँह धो रखो ।

सत्य की शक्ति उसे निडर बना देती है । वह अपने निर्णय में अडिग रहती है ।

आदर्श माता – धनिया स्वभावत: स्नेहशील है । वह गोबर, सोना और रूपा से बहद प्यार करती है । उनके ऊपर कोई भी संकट आने नहीं देती । बहू झुनिया से वह बेटी की तरह प्यार करती है । भोला होरी के घर पर आकर झुनिया को भलाबुरा कहता है तो जब झुनिया घर से निकल जाने को तैयार होती है तो धनिया का मातृप्रेम उमड़ पड़ता है । उसे घर के भीतर जाने का आदेश देकर पूरा संरक्षण देती है । झुनिया इस घटना से इतनी प्रभावित होती है । वह अपनी अभिलाषा व्यक्त करती है - भगवान मुझे फिर जन्म दें तो तुम्हारी कोख में दें ।''

बाद में जब गोबर झुनिया को शहर ले जाने को चाहता है, धनिया इसका विरोध करती है । पुत्र को दोषी न मानकर झुनिया को नागिन मानती है वह सोचती है कि यह डाइन बनकर पुत्र को उससे छीन लेती है ।

Scanned by TapScanner

वह पोते को बहुत प्यार करती है । उसे उबटन मलती, काजल लगाती, सुलाती और प्यार करती है । पर वह दूर चले जाने पर उसकी आत्मा रो उठती है ।

गोबर उसे भला-बुरा कहता है । जाते समय माँ के पैर छूने से इनकार कर देता है । गोबर चला जाता है तो धनिया रो पड़ती है । उसे इतना दु:ख हो रहा है मानो कोई उसके हृदय को चीर रहा हो ।

हीरा गाय को विष दे देता है तो पहले वह उसे विश्वास नहीं कर पाती, क्योंकि उसने हीरा को पाला है । स्नेह दिया है ।

रामसेवक के साथ अपनी बेटी को विवाह देना वह नहीं चाहती थी । पर मजबूरी से बाद में राजी हो जाती है ।

आदर्श पत्नी - सहनशील - धनिया दूसरों के लिए कष्ट सहती है । संयुक्त परिवार में देवर-देवरानियों के लिए कष्ट सहती है । आराम की रोटी नहीं मिलती फिर भी कर्त्तव्य से कभी नहीं डिगती । झुनिया और सिलिया को अपने घर शरण देती है । उनके लिए कष्ट सहती है, पर हँसते -हँसते दु:ख के विष को पी जाती है । होरी यथार्थ रूप से उसके लिए कहता है -''बेचारी जब से घर में आई, कभी भी आराम से बैठी । डोली से उतरते ही सारा काम सिर पर उठा लिया । तब देवरों के लिए मरती थी । अब बच्चों के लिए मरती है ।

धनिया को घर के लिए पेट-तन काटना पड़ा है । एक-एक लत्ते के लिए जीवन भर तरसी है । उसने एक-एक पैसा प्राणों की तरह संचित किया है । अभाव में सभी को खिलाकर उसे पानी पीकर सोना पड़ा है ।

होरी आवेश में आकर धनिया की ओर लपकता है । सभी के सामने बेइज्जती होने से धनिया को ठेस लगती है । पर जब होरी को ज्वर आया तो उसकी ममता जागती है - वह सोचती है - लाख बुरा हो, पर उसी के साथ जीवन के पच्चीस साल कटे हैं । सुख किया है तो उसीके साथ, दु:ख भोगा है तो उसी के साथ । अब चाहे वह अच्छा है या बुरा, अपना है ।

वह गाय खरीदने की लालसा से पति के साथ देर रात तक सुतली कातती है । काम करते समय होरी को लू लग जाती है । धनिया दौड़कर आती है । वह होरी को छूती है तो उसका कलेजा सन से हो गया । वह रोती है, आम भूनकर पना बनाकर पिलाती है । होरी के शरीर पर गेंहूँ की भूसी की मालिश करती है । लोग गोदान के लिए कहते हैं । वह सुतली बेचकर रखे गए बीस आने पैसे पति के ठंडे हाथ में रखकर दातादीन से कहती है -''महाराज , घर में न गाय है, न बछिया, न पैसा । यही पैसे हैं, यही इनका गोदान है ।'' फिर वह पछाड़ खाकर गिर पड़ती है । धनिया जो कष्ट सहती है, वह अपने लिए नहीं, वरन् परिवार के लिए और न्यायपथ पर चलने वाले असहायों के लिए । वह असहायों के लिए जितना कोमल है, अत्याचारियों के लिए उतना कठोर है । वह स्वाभिमानी और साहसी होने के नाते सभी

Scanned by TapScanner

अन्यायों का डटकर विरोध करती है । गाँव की सारी घटनाओं के केंद्र में वही है । वह उपन्यास की नायिका है । होरी की सहधर्मिणी और सहकर्मिणी भी है । वह होरी के चरित्र को पूर्णता प्रदान करती है । उसके बिना होरी का जीवन अधूरा लगता है ।

जब होरी पर संकट मंडराता है, धनिया बेचैन हो जाती है । उसकी रक्षा करने तैयार रहती है । वह चाहती है कि उसका सर्वस्व चले जाने पर भी पति सकुशल रहें । मजाक में होरी कहता है वह साठ साल की उम्र तक रह नहीं पाएगा । यह सुनकर धनिया काँप जाती है । वह जैसे अपने नारीत्व के संपूर्ण तप और व्रत से अपने पति को अभयदान दे रही थी ।

धनिया यौवन काल में बहुत सुन्दर थी । उसके द्वार पर पटेश्वरी झिंगुरी सिंह चक्कर लगाते थे । किसी को कुछ कहने का साहस न था । पटेश्वरी को उसने ऐसा मुँह तोड़ जवाब दे दिया था कि उसे वह भूल न सका ।

वह स्वयं पतिव्रता थी । इसलिए पतिव्रता सिलिया को अपने घर में जगह देती है ।

वह पति का पथ-प्रदर्शन करती है । पर सरल होरी धर्म, बिरादरी, मर्यादा और पंचों आदि के डर से सब अनसुना कर देता है और कष्ट सहता है ।

धनिया पति को डांटती है, पति के कारण भाग्य पर रोती है । लेकिन वह दूसरों के सामने पति की रक्षा करती है । पति का पक्ष लेकर गोबर से बिरादरी में रहने की मजबूरी पर प्रकाश डालती हुई कहती है - ''बेटा तुम भी अंधेर करते हो । हुक्का पानी बंद हो जाता, तो गाँव में निर्वाह होता ! जवान लड़की बैठी है । उसका भी कहीं ठिकाना लगाना है कि नहीं ?''

अनुभव संपन्न नारी -धनिया गाँव के लोगों की ईर्ष्या और पर -दु:ख विभोरता आदि गुणों से परिचित है । इसलिए गाय को सही सलामत रखने के लिए आँगन में नाँद गड़वाना चाहती है ।

हीरा से झगड़ा होने पर हीरा उसे जूते मारने की धमकी देता है तो सब हीरा के खिलाफ हो जाते हैं । धनिया इस अवसर का फायदा उठाकर हीरा को धक्का देकर गिरा देती है । इससे उसका फौलादी व्यक्तित्व उभर कर सामने आ जाता है ।

वह मानती है कि जमींदार के जेल जाने से सुराज नहीं मिलता । धर्म और न्याय पर आधारित समाज में गरीबों को कुछ राहत मिलेगी तो वही सुराज होगा ।

वह भोला को सजग करा देती है कि तुमने नोहरी से शादी करके अच्छा नहीं किया । वह कहती है -औरत को अपने वश में रखने का बूता न था, तो सगाई क्यों की थी ? वह स्पष्ट कर देती है कि वह पत्नी सेवा कर सकती है, जिसने तुम्हारे साथ जवानी का सुख उठाया हो ।

Scanned by TapScanner

कभी-कभी धनिया के चरित्र में विरोधाभास मिलता है । गाय आने पर वह खुश होती है । पर अनागत विपत्ति की शंका से डर जाती है । गाय मर जाती है तो कहती है -''इस निगोड़ी गाय का पैर जिस दिन से आया, घर तहस-नहस हो गया ।

होरी के विचार से सहमत न होकर वह पति पर बिगड़ती है तो दूसरे क्षण में उसकी असहायता देखकर द्रवित हो जाती है ।

होरी को बहुत प्यार करती है । स्वयं मिटकर उसे सही सलामत रखना चाहती है, पर कभी-कभी भला-बुरा कह देती है ।

कभी गोबर को प्यार करती है, कभी दोष देती है । कभी बहू को प्यार करती है, कभी नागिन कहती है ।

वह एक बहिर्मुखी पात्र है । मन के दु:ख को क्रोध रूप में प्रकट कर देती है, लेकिन एक आदर्श गृहणी के रूप में अपना कर्त्तव्य सही रूप से निभाती है ।

❋ गोबर :

गोबर होरी और धनिया का बेटा है । उसका स्वभाव अपने पिता से विपरीत है । वह प्रत्येक अन्याय का विरोध करता है । वह नई पीढ़ी के असंतोष का प्रतीक है । धर्मभीरुता, सरलता और भाग्यवादिता के कारण तथा साहूकार के कर्जे की चक्की में पिस जाने के कारण पिता की असहायता देखकर गोबर विद्रोही मनोभाव संपन्न नवयुवक बन जाता है । उसके चरित्र में विभिन्न घात-प्रतिघात के बीच विकास दिखाई पड़ता है । उसे किसानी में कोई मर्यादा दिखाई नहीं पड़ती । उसका सिद्धांत है कि पैसा ही सब कुछ है । उसके विचार से ''जिसके साथ चार पैसे गम खाओ वही अपना । खाली हाथ तो माँ-बाप भी नहीं पूछते ।''

सरल युवक - गोबर एक सरल युवक है । भोला के घर पर भूसा लेते समय और गाय लाते समय उसकी विधवा बेटी झुनिया से उसका प्रेम -संबंध स्थापित हो जाता है । झुनिया से उसके मिलने की पूर्व स्थिति इस प्रकार थी - उसकी दृष्टि में अभी उसके यौवन में केवल फूल लगे थे, जब तक फल न लग जाएँ उस पर ढेले फेंकना व्यर्थ बात थी और किसी ओर से प्रोत्साहन न पाकर उसका कौमार्य उसके गले से चिपका हुआ था ।

वह झुनिया से शारीरिक संबंध रखकर उसे जब गर्भवती कर देता है, तब माँ-बाप, समाज किसी का सामना करने की ताकत उसमें नहीं रह जाती । वह फुसलाकर झुनिया को अपने घर तक पहुँचाकर छुपकर शहर भाग जाता है । वह समझता है कि वह धन कमाकर घर लौटेगा तो धन के बल पर

Scanned by TapScanner

गाँववालों का मुँह बंद कर देगा और दादा-अम्मा उसे कुल-कलंक न समझ कर कुल तिलक समझेंगे ।

मिर्जा खुर्शीद की रक्षा करते हुए हड़ताल में वह पिट गया । बुरी तरह घायल हुआ । हाथ की हड्ही टूट गई । झुनिया उसकी सेवा करती है । गोबर को लगता है कि पत्नी को सताने का फल उसे मिला है ।

झुनिया मजदूरी करके परिवार चलाने लगती है । तो गोबर का हृदय परिवर्तन हो जाता है । वह मानो प्रायश्चित करने को तैयार हो जाता है । उसके जीवन का रूप बदल जाता है । उसके मन में पूँजीवादी समाज -व्यवस्था के प्रति आक्रोश है, पर मानसिक दृढ़ता के अभाव में वह क्रांतिकारी नहीं बन पाता ।

व्यवहार कुशल – गोबर अपनी व्यवहार कुशलता से भोला का क्रोध शांत कर देता है । वह जब कहता है -'काका, मुझसे जो कुछ भूल-चूक हुई, उसे क्षमा करो तब भोला प्रसन्न हो जाता है ।

वह नोखेराम को क्रोध दिखाकर और सारी बातें जमींदार रायसाहब अमरसाल सिंह तक पहुँचाने की धमकी देकर सीधे रास्ते पर ले आता है । दुबारा लगान वसूल करने के विचार से नोखेराम विरत हो जाता है । गोबर अपनी मित्र मंडली से मिलकर नाटक खेलकर सभी का प्रिय पात्र बनता है ।

निर्दय – वह झुनिया को गर्भवती करके अपने घर तक पहुँचाकर शहर भाग जाता है । जिसका जीवन भर साथ देने का वादा किया था, उसे भूल-सा जाता है । शहर जाते समय अपनी माँ से झगड़ता है, पाँव नहीं छूता, माँ के दिल को दु:ख पहुँचाता है । पिता को भी जली-कटी सुनाता है । उनकी सरलता की खिल्ली उड़ाता है । बहाना बनाकर झुनिया को पीटता है । गर्भवती झुनिया की संतान के जन्म होने की कोई सावधानी नहीं बरतता है । अपने बेटे की मौत उसे उतना नहीं खलती ।

अन्याय के प्रति विद्रोही तेवर – गोबर जानता है कि जमींदार , साहूकार शोषण और अन्याय का जाल फैलाकर गाँव के निरीह किसानों की दशा बदतर कर देते हैं । इसलिए वह नहीं चाहता कि पिता जमींदार की चापलूसी करे । वह उनसे कहता है - ''यह तुम रोज -रोज मालिकों की खुशामद करने क्यों जाते हो ? बाकी न चुके तो प्यादा आकर गालियाँ बकता है । बेगार देनी ही पड़ती है । नजर-नजराना सब तो हमसे भराया जाता है । फिर किसी को क्यों सलाम करें ।

जमींदार अमरपाल सिंह अपनी स्थिति से असंतोष व्यक्त करते हैं । किसानों के पक्ष में होने की बात करते हैं । वे असल में शोषक वर्ग के हैं । गोबर उनकी चाल समझ सकता है । वह कहता है कि यदि जमींदार अपनी स्थिति से असंतुष्ट है तो वह अपना इलाका दे दे और बदले में उसके खेत, बैल हल और कुदाल ले ले । वह जमींदार की धूर्तता की ओर संकेत करते हुए कहता है -'' जिसे दु:ख होता है, वह दर्जनों मोटर नहीं रखता, महलों में नहीं रहता, हलवा पूरा नहीं खाता और न नाच-रंग में लिप्त रहता है ।''

Scanned by TapScanner

वह जानता है कि जिसके हाथ में रहती लाठी है, वह गरीबों को कुचल डालता है ।

कारिंदा नोखेराम होरी से लगान वसूल कर लेता है, पर रसीद नहीं देता । वह लगान दुबारा लेने की मंसा लेकर होरी के यहाँ प्यादा भेजता है तो गोबर आग बबूला होकर जाकर नोखेराम को डाँटता है । वह नोखेराम से कहता है कि मैं अदालत में गंगाजली उठवाकर रुपये दूँगा । तुम रसीद न देने का प्रमाण कर दूँगा । इतना सुनकर नोखेराम नरम पड़ जाता है, तुम थोड़े से रुपए के लिए झूठ थोड़े ही बोलोगे कह कर उसकी खुशामद करता है ।

भाग्य में अविश्वास - गोबर भाग्यवादी नहीं है । वह मानता है कि किसानों के दु:ख का कारण भाग्य नहीं, बल्कि महाजनों-साहूकारों का कुचक्र है । वह ब्राह्मणों के कर्मकाण्ड और भाग्यविधान पर विश्वास नहीं करता । वह पिता से कहता है कि भगवान ने सभी को बराबर बनाया है । वह मानता है कि हमें अपना भाग्य स्वयं बनाना होगा । अपनी बुद्धि और साहस से इन आफतों पर विजय पाना होगा ।''

धनवान वर्ग के धर्म-भाव और पूजा-पाठ को वह पाखंड मानता है । वह चुनौती देता है कि यदि वे भूखे-नंगे रहकर पूजा-भजन करें, तो हम देखें । एक दिन खेत में ईख गोड़ना पड़े तो वे सारी भक्ति भूल जायेंगे ।

साहसी - गोबर साहसी है । वह रायसाहब के दोषों की आलोचना करता है । दातादीन को धमकाता है । नोखेराम की गलतियों का भंडाफोड़ करता है । उसे देखकर चौपाल के साहूकार वर्ग भयभीत हो जाते हैं ।

कानून का जानकार - वह शहर में रहकर राजनीतिक और कानूनी दृष्टि से सजग हो जाता है । सभाओं में आने-जाने से राष्ट्र और वर्ग का अर्थ समझने लगा है । सामाजिक रूढ़ियों और लोक -निंदा का भय उसमें कम हो जाता है । दातादीन को हिसाब लगाकर उसके ब्याज का परिमाण बता देता है लगान चुकाते समय रसीद लेने पर जोर देता है । वह पिता से कहता है कि यदि वह रसीद नहीं देता तो डाक से रुपया भेजो ताकि -धांधली न हो पावे । वह साहूकारों की करतूतों को उजागर करने के लिए उन्हें अदालत में खींचने की धमकी देता है । होली पर मुखिया का व्यंग्य करता है तो होरी सोचता है - लड़के की अक्ल जैसे खुल गई है । कैसी बेलाग बात कहता है ।

स्वार्थी - गोबर अपने आचरण से सरल होते हुए भी स्वार्थी प्रतीत होता है । वह झुनिया को गर्भवती कर देता है । उसे अपने घर पहुँचा कर देर से आने का वादा करके चुप से शहर चला जाता है । वह खबर नहीं रखता कि झुनिया का फिर क्या हुआ ?

वह शहर में जाकर पहले मिर्जा खुर्शीद के पास काम करता है, उनके यहाँ रहता है । पर बाद में

Scanned by TapScanner

जब मिर्जा खुर्शीद से पांच रुपया उधार मांगता है, तो वह पैसे नहीं है कहकर बात टाल देता है । वह अहसान नहीं मानता । पैसे वापस नहीं मिलेंगे, यह जानकर बहाना बना देता है । वह उसी समय अल्लादीन को रुपए उधार देता है ।

पिता उसका पालन-पोषण करके उसे बड़ा करते हैं । वह उनके मुँह पर कहता है कि वह लावारिस की तरह बढ़ा है । गोबर स्वार्थी बन कर माँ-बाप के सपने चूर-चूर कर देता है ।

माँ-बाप कितनी मेहनत करते हैं । कितना कष्ट उठाते हैं । पर वह माँ से झगड़ता है । शहर जाते समय माँ से बात नहीं करता । पांव नहीं छूता । क्रोध से यहाँ तक कह देता है कि मैं उसे अपनी माता नहीं समझता । वह साफ कह देता है कि मैं पिता का कर्जा नहीं चुका सकता और बहनों की शादी नहीं कर सकता । गोबर नयी पीढ़ी का प्रतिनिधि है । मालती -मेहता के संपर्क में आकर उसके आचरण मार्जित होता है । उसे अपनी सामाजिक आर्थिक स्थिति उसकी इच्छा को साकार होने नहीं देती । वह पलायनवादी बन जाता है ।

* डॉ. मेहता :

डॉ. मेहता युनिवर्सिटी में दर्शन शास्त्र के अध्यापक हैं । वे आधुनिक शिक्षित और बुद्धिजीवी हैं । समाज में उपस्थित सभी समस्याओं पर वे अपना विचार रखते हैं । वे शहरी पात्रों की मानसिकता का प्रतिनिधित्व करते हैं ।

उनके चरित्र में निम्नलिखित विशेषताएँ हैं -

लज्जाशीलता – मेहता अविवाहित हैं । वे महिलाओं की सभा सोसाइटी में घबरा जाते हैं । लेखक ने उनके बारे में बताया है बिना ब्याहे और नवयुग की रमणियों से पनाह मांगते थे । पुरुषों की मंडली में खूब चहकते थे । मगर ज्योंही कोई महिला आई , आपकी जबान बंद हुई ; जैसे बुद्धि पर ताला लग जाता था । स्त्रियों से विशिष्ट व्यवहार करने तक की सुधि न रहती थी ।

स्पष्टवादी – मेहता स्पष्टवादी हैं । वे सच बोलने से कभी नहीं कतराते । वे किसी की निरर्थक खुशामद भी नहीं करते । वे मालती में अच्छाई देखकर उसका लिहाज करते हैं और उसकी ओर आकृष्ट भी हो जाते हैं । परंतु शिकार खेलने के अवसर पर एक कलूटी जंगली स्त्री के साथ मेहता जब मधुर बातचीत करते हैं, तब मालती ईर्ष्यान्वित हो जाती है । इस पर मेहता नि:संकोच अपनी टिप्पणी देते हैं - कुछ बातें तो उसमें ऐसी हैं कि अगर तुम में होती तो तुम सचमुच देवी हो जाती ।

लेखक प्रेमचन्द मेहता के भाषण के संबंध में कहते हैं -''मेहता को कटु सत्य कहने में संकोच न होता था । मेहता साहब स्त्रियों की सभा में जो भाषण देते हैं और स्त्रियों के सामने जो उनकी कटु और

Scanned by TapScanner

निष्ठुर आलोचना करते हैं, वह भी उनकी स्पष्टवादिता का प्रमाण है ।''

मेहता शादी के संबंध में अपना स्पष्ट विचार रायसाहब को सुना देते हैं -''क्षमा कीजिएगा आप ऐसा प्रश्न लेकर आए हैं कि उस पर गंभीर विचार करना मैं हास्यास्पद समझता हूँ । आप अपनी शादी के जिम्मेदार हो सकते हैं, लड़के की शादी का दायित्व क्यों अपने ऊपर लेते हैं, खासकर जब आपका लड़का बालिग है और अपना नफा-नुकसान समझता है । कम से कम मैं तो शादी जैसे महत्व के मुकाबले में प्रतिष्ठा का कोई स्थान नहीं समझता ।''

मेहता दोहरी जीवन -दृष्टि से नफरत करते हैं । उनका विचार है कि अगर मांस खाना पसंद है तो खुलकर खाओ । बुरा समझते हो तो मत खाओ । पर बुरा समझना और छिपकर खाना धूर्तता है, कायरता है ।

वे रायसाहब से कहते हैं -'' मानता हूँ आपका अपने आदमियों के साथ बहुत अच्छा बर्ताव है, मगर प्रश्न यह है कि उसमें स्वार्थ है या नहीं । उसमें एक कारण क्या यह नहीं हो सकता कि मध्यम आँच में भोजन स्वादिष्ट पकता है । गुड़ से मारने वाला जहर से मारने वाले की अपेक्षा कहीं अधिक सफल हो सकता है ।''

भावुक और संवेदनशील - मेहता भावुक और संवेदनशील व्यक्ति हैं । गोविंदी के दु:ख से द्रवित होकर वे कहते हैं -'' मुझे न मालूम था आप उनसे इतनी दु:खी हैं, मेरी बुद्धि का दोष, आँखों का दोष, कल्पना का दोष और क्या कहूँ, वरना आपको इतनी वेदना क्यों सहनी पड़ती ?''

धन - मेहता की दृष्टि से धन केवल जीवन -निर्वाह के साधन के रूप में महत्त्व रखता है । सामाजिक विषमता को केवल धन के समान वितरण से मिटाया नहीं जा सकता । क्योंकि छोटे-बड़े का भेद केवल धन से नहीं होता । धनकुबेर भिक्षुओं के पांव पड़ते हैं । राजा भी रूप के सामने विनय -भाव दिखाते हैं ।

विवाह - विवाह के संबंध में मेहता ओंकारनाथ को बताते हैं -'' मैं समझता हूँ मुक्त भोग आत्मा के विकास में बाधक नहीं होता । विवाह तो आत्मा को और जीवन को पिंजरे में बंद कर देता हैं ।''

''विवाह को मैं सामाजिक समझौता समझता हूँ और उसे तोड़ने का अधिकार न पुरुष को है , न स्त्री को । समझौता करने के पहले स्वाधीन हैं, समझौता हो जाने के बाद आपके हाथ कट जाते हैं । मेहता समाज की दृष्टि से विवाहित जीवन को और व्यक्ति की दृष्टि से अविवाहित जीवन को श्रेष्ठ मानते हैं ।

Scanned by TapScanner

जीवन – मेहता की राय में प्रवृत्ति और निवृत्ति दोनों के बीच में सेवा -मार्ग जीवन को सार्थक बना सकता है । मेहता जीवन के संबंध में गोविंदी को बताते हैं -'' जीवन मेरे लिए आनन्दमय क्रीड़ा है, सरल, स्वच्छन्द, जहाँ कुत्सा, ईर्ष्या और जलन के लिए कोई स्थान नहीं । मैं भूत की चिंता नहीं करता, भविष्य की परवाह नहीं करता । मेरे लिए वर्तमान सब कुछ है ।''

स्त्री की परिभाषा – मेहता मिर्जा खुर्शीद को स्त्री की परिभाषा इस प्रकार बताते हैं -'' स्त्री पृथ्वी की भाँति धैर्यवान है, शांतिसंपन्न है । सहिष्णु है । संसार में जो कुछ सुन्दर है, उसी की प्रतिमा को में स्त्री कहता हूँ । मैं उससे यही आशा रखता हूँ कि उसे मार ही डालूँ तो भी प्रतिहिंसा का भाव उसमें न आए । अगर मैं उसकी आँखों के सामने किसी स्त्री को प्यार करूँ, तो भी उसकी ईर्ष्या न जागे । ऐसी नारी पाकर मैं उसके चरणों में गिर पड़ूँगा और उस पर अपने को अर्पण कर दूँगा ।''

स्त्री पुरुष की यथार्थ स्थिति के संबंध में मेहता का विचार इस प्रकार है -'' मेरे जेहन में औरत वफा और त्याग की मूर्ति है, जो अपनी बेजबानी से, अपनी कुर्बानी से अपने को बिलकुल मिटाकर पति की आत्मा का अंश बन जाती है ।'' मिसेज खन्ना की तारीफ करते हुए मेहता कहते हैं -'' मैं ऐसी बीबी चाहता हूँ जो मेरे जीवन को पवित्र और उज्वल बना दे, अपने प्रेम और त्याग से ।''

स्त्रियों के पाश्चाश्त्य रूप का विरोध करते हुए मेहता कहते हैं -''मुझे खेद है - हमारी बहिनें पश्चिम का आदर्श ले रही हैं, जहाँ नारी ने अपना पद खो दिया है और स्वामिनी से गिरकर विलास की वस्तु बन गई है । पश्चिम की स्त्री स्वच्छन्द होना चाहती है, इसलिए कि वह अधिक से अधिक विलास कर सके । हमारी माताओं का आदर्श कभी विलास नहीं रहा ।''

वे पश्चिम की अंधी नकल न करके अच्छी चीजों को ग्रहण के पक्ष में रहते हैं । पश्चिम की स्त्रियों का भोग-लालसा में उच्छृंखल हो जाना और आमोद-प्रमोद के मोह में अपनी लज्जा और गरिमा खो बैठना उनको अखरता है ।

वीमेन्स लीग में भाषण देते हुए मेहता स्त्री का गुणगान करते हुए कहते हैं - स्त्री पुरुष से उतनी श्रेष्ठ है जितना प्रकाश अंधेरे से । मनुष्य के लिए क्षमा और त्याग और अहिंसा जीवन के उच्चतम आदर्श हैं । नारी इस आदर्श को प्राप्त कर चुकी है ।

परिश्रमी – मेहता समय के पाबन्दी हैं । वे समय के दुरुपयोग को पाप समझते हैं । वे आधी रात को सोते थे और घड़ी रात रहे उठ जाते थे । कैसा भी काम हो, उसके लिए कहीं न कहीं समय निकाल लेते थे ।

बहुमुखी प्रतिभा – मेहता हर काम में रुचि रखते थे । वे कभी कबड्डी खेलते हैं तो कभी मजदूर -आन्दोलन में भी भाग लेते हैं । वे शिकार खेलने जाते समय मालती को कंधे पर बिठाकर नाला

Scanned by TapScanner

पार करते समय रोमांटिक प्रवृत्ति का परिचय देते हैं । उनके प्रभावशाली व्यक्तित्व से मालती उन पर फिदा हो जाती हैं । वे मि. खन्ना और मिसेज खन्ना के बीच समझौता करा देते हैं । वे अपने विषय के अच्छे जानकार हैं । वे किसी भी समस्या पर अपना सुलझा हुआ दृष्टिकोण रख सकते हैं ।

वोट- वीमेन्स लीग में सरोज और अन्य युवतियाँ मांग रखती हैं कि हमें पुरुषों के बराबर वोट मिलना चाहिए । मेहता वोट पर अपनी राय देते हैं - ''वोट नए युग का मायाजाल है, मरीचिका है, कलंक है, धोखा है, उसके चक्कर में पड़कर आप न इधर की होंगी न उधर की । संसार में सबसे बड़ा अधिकार सेवा और त्याग से मिलता है । वह आपको मिले हुए हैं ! उन अधिकारों के सामने वोट कोई चीज नहीं ।''

प्रेम – वीमेन्स लीग में सरोज के प्रेम -संबंधी प्रश्न के उत्तर में मेहता कहते हैं कि जिसे तुम प्रेम कहती हो, वह धोखा है, उद्दीप्त लालसा का विकृत रूप, उसी तरह जैसे संन्यास केवल भीख मांगने का संस्कृत रूप है । वह प्रेम अगर वैवाहिक जीवन में कम है, तो मुक्त विलास में बिलकुल नहीं है । सच्चा आनन्द , सच्ची शांति केवल सेवा -व्रत में है । सेवा सीमेंट की तरह है जो दंपति को जीवन पर्यान्त स्नेह और साहचर्य में जोड़े रख सकता है । जहाँ सेवा का अभाव है, वहीं विवाह -विच्छेद है, परित्याग है, अविश्वास है ।

मालती ने मेहता से पूछा कि तुम कैसे प्रेम से संतुष्ट होगे ? उत्तर में महेता ने कहा -'' बस यही कि जो मन में हो, वही मुख पर हो । मेरे लिए रंग रूप, हाव-भाव और नाजो-अन्दाज का मूल्य बस उतना ही है, जितना होना चाहिए ।'' प्रेम संबंध में मेहता कहते हैं -प्रेम जब आत्मा -समर्पण का रूप लेता है, तभी ब्याह है । उसके पहले ऐयाशी है ।

दानशील – मेहता मासिक एक हजार रुपए वेतन पाने पर भी छात्रों, विधवाओं और असहायों की मदद कर देते हैं । इस कार्य के लिए उनको कर्जा भी लेना पड़ता है ।

शोषक समाज से घृणा – मेहता शोषक - समाज से घृणा करते हैं । इसलिए वे मिल मालिक मि. खन्ना को ऊँची नजर से नहीं देखते । पर खन्ना के मिल में आग लगने के बाद उन्हें पश्चाताप होने से मेहता खन्ना की इज्जत करते हैं ।

इस प्रकार मेहता एक आदर्श प्रस्तुत करके समाज में अपना प्रभाव डालते हैं और पाठक वर्ग उनका अनुसरण करने को प्रेरित होते हैं ।

Scanned by TapScanner

✻ रायसाहब :

रायसाहब अमरपाल सिंह जमींदार हैं । वे सेमरी में रहते हैं । वे अपने समय के उन जमींदारों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो वास्तव में शोषक और प्रजापीड़क होते हुए भी प्रजा-हितैषी और समाज - सेवक होने का दिखावा करते थे ।

सखा कृषक होरी को अपने पक्ष में रखकर अपना उल्लू सीधा करना उनका कुटिल मकसद है । वे जानते हैं कि होरी जैसे भोले-भाले लोग उनकी चिकनी-चुपड़ी बातों से प्रभावित होकर उनकी प्रशंसा करेंगे और अपने भाग्य की सराहना करेंगे । वे यह आशा भी रखते हैं कि ऐसे लोगों के माध्यम से लगान सगुन के लिए अनुकूल वातावरण भी मिल जाएगा । वे जिस समय होरी से आत्मीयता भरी बातें करते हैं, उसी समय अरदली आकर बताता है कि बेगारी लोग भूखे रहकर काम करने से इनकार कर रहे हैं । यह सुनकर रायसाहब आग बबूला होकर कहते हैं -''चलो, मैं इन दुष्टों को ठीक करता हूँ । जब कभी खाने को नहीं दिया गया, तो आज नई बात क्यों ?''

रायसाहब देशप्रेमी होने का दिखावा करते हैं । वे सत्याग्रह संग्राम में हिस्सा लेकर यश कमा लेते हैं ; कौन्सिल की मेंबरी छोड़कर जेल जाते हैं । इससे आसामियों की उन पर बड़ी श्रद्धा है । यद्यपि उनके इलाके में कोई रियायत नहीं की जाती, डाँड या बेगार की कड़ाई कम नहीं होती, पर सारी बदनामी मुख्तारों पर जाती है । उनकी कीर्ति-पताका चारों ओर उड़ती रहती है । वे आसामियों से हँसकर बोल लेते हैं तो वे लोग कृतकृत्य हो जाते हैं ।

वे अवसरवादी व्यक्ति हैं । वे शहर के बुद्धिजीवियों, बैंकरों, संपादक ओंकारनाथ को दावत देते हैं, उन्हें शिकार पर ले जाते हैं । ये सब वे इसलिए करते हैं कि मौके पर उनसे फायदा उठाया जा सके । वे सरकारी अफसरों, पुलिस और अंग्रेजों को समय-समय पर दस्तूरी भेंट और डाली देकर उन्हें खुश रखते हैं ।

रायसाहब धूर्त हैं । वे अपने व्यवहार में दुहरी नीति अपनाते हैं । वे एक तरफ जेल जाकर देशप्रेमियों की तालिका में अपना नाम दर्ज करा देते हैं तो दूसरी तरफ सरकार को खुश करके रायबहादुर की उपाधि प्राप्त कर लेते हैं । वे मुँह में स्वदेश नीति की प्रशंसा करते हैं तो व्यवहार में पाश्चात्य ढंग से रहते हैं । वे किसानों से नजराना लेते हैं, तो दूसरी ओर आदर्शवाद की बात करते हैं । वे ओंकानाथ को इसलिए रिश्वत देते हैं कि उनकी छवि को धूमिल करने वाली ऐसी खबर न छपे ।

रायसाहब अपनी स्थिति को स्पष्ट करते हुए ओंकारनाथ से कहते हैं -''मुझे किसानों के साथ जीना-मरना है । मुझसे बढ़कर दूसरा उनका हितेच्छु नहीं हो सकता । लेकिन मेरी गुजर कैसे हो ?'' वे स्पष्ट कर देते हैं कि दावत और चंदे के लिए असामियों के घर से ही वे खर्च निकालेंगे । यह सुनकर

Scanned by TapScanner

व्यंग्य से मेहता कहते हैं-'' गुड़ से मारने वाला जहर से मारने वाले की अपेक्षा सफल हो सकता है ।''

रायसाहब गाँव और शहर को जोड़ने वाली कड़ी के रूप में आते हैं ।

रायसाहब अंग्रेज हुकूमत के स्तावक हैं । देश -सेवा करने के मोह से उन्होंने सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लिया । लेकिन इसके लिए वे नहीं पछताते हैं, वे कहते हैं -'' मैं अपने को रोक न सका जेल गया और लाखों रुपयों की जेरबारी हुई और अभी तक उसका तावान दे रहा हूँ । मुझे उसका पछतावा नहीं है, बिलकुल नहीं ।''

बाद में रायसाहब उसके लिए पछतावा करके कहते हैं -'' कांग्रेस में शरीक हुआ उसका तावान अभी तक देता जाता हूँ । काली किताब में नाम दर्ज हो गया ।''

बाद में जब रायसाहब अंग्रेजों की स्तुति करने लगते हैं, परिणाम -स्वरूप हिज मैजेस्टी के जन्मदिन के अवसर पर उन्हें 'राजा ' की पदवी मिल जाती है । जिस समय हिज ऐक्सेलेन्सी गवर्नर ने उन्हें पदवी प्रदान की उस समय उनका मन हर्ष से विभोर हो गया । वे कहते हैं -'' विद्रोहियों के फेर में पड़कर व्यर्थ बदनामी हुई थी । जेल गए, अफसरों की नजर में गिर गए । जिस डी.एस.पी. ने उन्हें पिछली बार गिरफ्तार किया था, उस वक्त वह उनके सामने हाथ बांधे खड़ा था और शायद अपने अपराध के लिए क्षमा मांग रहा था ।''

रायसाहब पतनोन्मुखी जमींदारों के प्रतीक हैं । उनकी पुत्री का तलाक हो जाता है ; पुत्र से झगड़ा हो जाता है । वे जीवन भर कर्जे के बोझ से दबे रहते हैं, फिर भी अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रदर्शन करने के लिए दूसरों को दावत देते रहते हैं । फिर भी उनके लिए अनुकूल समय आता है । वे बरबाद होने से संभल जाते हैं । उनके तीन मंसूबे पूरे हो जाते हैं । उनकी कन्या की शादी हो जाती है । उन्हें होम मेंबरी मिल जाती है और मुकदमे में जीत हासिल होने से ताल्लुकदारों में प्रथम श्रेणी का स्थान प्राप्त कर लेते हैं ।

* झुनिया :

झुनिया भोला की विधवा बेटी है । गोबर जब भोला के घर पर भूसा का खोंचा लेकर पहुँचता है । वहीं झुनिया से उसकी मुलाकात होती है । वह विधवा होने पर भी सुन्दर है । उसका रूप-वर्णन लेखक इस प्रकार करते हैं -''उसकी आँखें लाल थीं और नाक के सिरे पर भी सुर्खी थी । मालूम होता था अभी सोकर उठी है । उसके मांसल स्वास्थ्य सुगठित अंगों में मानो यौवन लहरें मार रहा था । मुँह बड़ा और गोल था, कपोल फूले हुए, आँखें छोटी और भीतर धंसी हुई, माथा पतला, पर वक्ष का उभार और गाल का वही गुदगुदापन आँखों को खींचता था । उस पर छपी हुई गुलाबी साड़ी उसे और भी शोभा प्रदान कर रही थी ।''

Scanned by TapScanner

पहली मुलाकात में गोबर झुनिया दोनों हँसी-मजाक करते हैं तो सहसा झुनिया को अपने बैधव्य की याद आ जाती है और वह सजग हो जाती है । लेखक झुनिया की मनोदशा का चित्रण इस प्रकार करते हैं -'' वह विधवा है । उसके नारीत्व के द्वार पर पहले उसका पति रक्षक बना बैठा रहता था । वह निश्चिंत थी । अब उस द्वार पर कोई रक्षक न था, इसलिए वह उस द्वार को सदैव बंद रखती है । कभी-कभी घर के सूनेपन से उकता कर वह द्वार खोलती है ; पर किसी को आते देखकर भयभीत होकर दोनों पट भेड़ लेती है ।''

झुनिया एक गृहस्थ की बालिका थी । लोग उससे परिहास करते हैं । ससुराल में दूध पहुँचाने ग्राहकों के घर जाते समय और विधवा होने पर भी दही बेचने उसे बाहर जाना पड़ता है । इसी समय तरह-तरह के लोगों के साथ उसका काम पड़ता था । वे उससे परिहास करते थे । इसमें उसे दो-चार रुपये मिल जाते थे और घड़ी भर के लिए मनोरंजन हो जाता था । लेकिन वह जानती थी कि यह आनन्द मंगनी की चीज है । उसमें टिकाव नहीं है, समर्पण नहीं है । अधिकार नहीं है । वह ऐसा प्रेम चाहती है जिसके लिए वह जिए और मरे, जिस पर वह अपने आपको समर्पित कर दे ।

वह गोबर को इस योग्य मानती है इसलिए उससे कहती है कि तुम मुझे मोल ले सकते हो ।

झुनिया बहुत सरल है । वह चाहती है कि मैं जिसकी हो जाऊँगी, उसकी जन्मभर के लिए हो जाऊँगी ; सुख में, दु:ख में, संपत में विपत में, उसके साथ रहूँगी । वह गोबर से कहती है -'' न रुपयों की भूखी हूँ, न गहने -कपड़े की । बस भले आदमी का संग चाहती हूँ , जो मुझे अपना समझे और जिसे मैं अपना समझूँ ।''

वह गोबर को बताती है कि कैसे लोग उसे भोग करने को तरसते हैं ; कैसे एक पंडित ने पचास रुपये देकर उसका भोग करना चाहता था । उसने सभी को सबक सिखाया । उसे दूसरे मर्दों के साथ रुपए - गहनों के लिए किसी औरत का घूमना फिरना बिलकुल पसन्द नहीं है । उसका विचार है -''एक के साथ मोटा-सोटा खा-पीकर उमर काट देना, वह बस अपना ही तो राग है ।''

झुनिया का विचार है कि मर्द ही औरतों को बिगाड़ते हैं । जब मर्द इधर-उधर ताक-झांक करेगा तो औरत भी आँख लड़ाएगी । झुनिया सरल गोबर को अपने प्रेम में फंसा लेती है ।

जब झुनिया पाँच माह की गर्भवती हो जाती है तो गोबर उसे अपने घर पर रात को छोड़कर शहर चला जाता है । एक विधवा को बहू बनाकर रखने से होरी का गाँव में हुक्का-पानी बंद हो जाता है । उसे पंचायत का जुर्माना भरना पड़ता है । झुनिया होरी और धनिया के आश्रय में रहती है । धनिया उसे माँ जैसी लगती है । उसके बेटा होता है ।

भोला जब होरी को धमकाता है कि तुम झुनिया को घर से निकाल दो, नहीं तो मैं तुम्हारे बैल खोलकर ले जाऊँगा, तब होरी की रक्षा करने झुनिया गोद में बच्चे को लिए घर से निकल आती है और

Scanned by TapScanner

बोलती है-''काका, लो, मैं इस घर से निकल जाती हूँ और जैसे तुम्हारी मनोकामना है, उसी तरह भीख मांगकर अपना और बच्चे का पेट पालूँगी, और जब भीख भी न मिलेगी तो कहीं डूब मरूँगी ।'' तब धनिया उसे बहू कहकर घर चलने को कहती है, तब कृतज्ञता से झुनिया रोती हुई बोलती है-''अम्मा ! जब अपना बाप होकर मुझे धिक्कार रहा है, तो डूब ही मरने दो । मुझ अभागिन के कारण तो तुम्हें दुःख ही मिला । जब से आई तुम्हारा घर मिट्टी में मिल गया । तुमने इतने दिन मुझे जिस प्रेम से रखा, माँ भी न रखती । भगवान फिर मुझे जनम दे तो तुम्हारी कोख से दें, यही मेरी अभिलाषा है ।''

लेकिन दूसरी परिस्थिति में वह कृतज्ञता भूल कर स्वार्थी बन जाती है । गोबर गाँव आ जाता है और झुनिया को अपने साथ ले जाना चाहता है । धनिया आरोप लगाती है कि झुनिया शहर जाना चाहती है और बेटे को उसने ही मंत्र पढ़ा दिया है । इससे झुनिया झल्लाकर कहती है-''अम्मा, जुलाहे का गुस्सा दाढ़ी पर न उतारो । कोई बच्चा नहीं है कि उन्हें फोड़ लूँगी । अपना-अपना भला बुरा सब समझते हैं । आदमी इसलिए नहीं जन्म लेता है कि सारी उम्र तपस्या करता रहे और एक दिन खाली हाथ मर जाए । सब जिन्दगी का कुछ सुख चाहते हैं, सबकी लालसा होती है कि हाथ में चार पैसे हों ।''

लेकिन घर छोड़ते समय झुनिया सौजन्य नहीं भूलती । वह सास के पास जाकर उसके चरणों को आंचल से छूती है । शहर जाकर झुनिया कठिन परिस्थिति का सामना करती है । उसे दूसरा बच्चा होने वाला है । गोबर का व्यवहार उसे खलता है । स्तन में दूध न उतरने से दो साल का बेटा भी क्रोधित हो जाता था कुछ दिन बाद बेटे को दस्त आने लगे और एक सप्ताह के बाद वह मर गया । अब झुनिया का मातृहृदय विलाप कर उठता है ।

गोबर को शराब का चस्का लग जाता है । वह कोई बहाना बनाकर झुनिया को गालियाँ देता है, मारता है, और घर से निकालने लगता है तो झुनिया को इस अपमान के लिए पश्चात्ताप होता है कि वह क्यों रखैली बनी ? वह ब्याहता होती तो बिरादरी उसके प्रति न्याय करती ।

झुनिया के मन में गोबर की भलमनसाहत के प्रति शंका उत्पन्न हो जाती है । कपटी के साथ घर से निकल भागने को वह अपनी भूल मानती है । अब वह गोबर को अपना दुश्मन समझने लगती है । उसे लगता है गोबर यदि बराबर इसी तरह मारता - पीटता रहेगा तब उसका जीवन नरक हो जाएगा । गोबर के मारते समय वह गुस्सा से उसका गला छुरे से रेत डालने का विचार करती है । पड़ोसिन चुहिया की सहायता से वह एक बच्चे को जन्म देती है ।

झुनिया को लगता है कि गोबर पक्का मतलबी है । मुझे केवल भोग की वस्तु समझता है । अब दोनों में नहीं पटती थी । पर हड़ताल में घायल होकर जब गोबर को उसके घर पर पहुँचा दिया जाता है, तब झुनिया का हृदय परिवर्तन हो जाता है और वह सारे अनर्थों की जड़ खुद को मानती है । वह जी-जान से गोबर की सेवा में लग जाती है । घर चलाने के लिए वह घास छीलने का काम करती है ।

Scanned by TapScanner

बाद में वह गोबर और बेटे मंगल के साथ मालती की दी हुई कोठरी में रहने लगती है । मंगल को चेचक निकल आती है तो मालती उसकी खूब सेवा करती है । रूपा की शादी के समय वह फिर ससुराल में आ जाती है । उसका मन और शहर जाने को नहीं चाहता । कुछ दिन सास-ससुर के साथ रहना वह चाहती है । और वह रुक भी जाती है । फिर उसके जीवन में स्थिरता आ जाती है ।

❋ मालती :

मालती एक विकसशील चरित्र है । उपन्यास के आदि से अंत तक वो एक कौतूहल के रूप में दिखाई देती है । मालती एक शहरी पात्र है । इंग्लैंड से डाक्टरी पढ़कर लखनऊ में प्रैक्टिस कर रही हैं । उनके रहन-सहन पर पश्चिमी प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है । वो बाहर से फैशनवाली लगने पर भी भीतर से उदात्त चरित्रवाली है ।

उनके पिता शराबी हैं, रोगी हैं । उसके दो बहनें हैं । पिताजी पर पच्चीस हजार रुपयों का कर्ज होने पर भी वे उस ओर लापरवाह हैं । मालती अविवाहित है । वो खुद परिवार का सारा बोझ ढोती है । यह जिम्मेदारी उन्हें विवाह पर सोचने नहीं देती ।

वे पुरुष मनोविज्ञान की अच्छी जानकार हैं । वे आमोद -प्रमोद को जीवन का सार तत्व समझती है । वे पुरुषों को लुभाने और रिझाने में प्रवीण है । पुरुषों के बीच तितली की भाँति घूमने -फिरने में उन्हें कोई संकोच नहीं है । विवाहित जीवन की अपेक्षा अविवाहित जीवन में वे सफलता की किरणें देख पाती हैं । गोविंदी उनके चाल -चलन से नाराज होकर कहती है -''ऐसी औरतें समाज में रहेंगी तो पुरुषों के कान तो गर्म करती रहेंगी ।''

वे बहुत हँसमुख और मिलनसार हैं । ताल्लुकदारों के महलों तक उनका बहुत प्रवेश है । मेक-अप करने में उन्हें कोई संकोच नहीं है । विनोद में वे ओंकारनाथ को शराब पिलाकर मूर्ख बना देती हैं । वे इसलिए विनोद करती हैं कि इससे उनका कर्त्तव्य भार कुछ हल्का हो जाता है । बाहर से वे पश्चिमी संस्कृति की उपासिका मालूम पड़ती हैं । वास्तव में वे भीतर से भारतीय आदर्श की उपासिका हैं । इसलिए लेखक उनके लिए कहते हैं -'' मालती बाहर से तितली और भीतर से मधुमक्खी है ।''

मेहता के प्रति आकर्षित - मालती के मित्रों में खन्ना , रायसाहब, मिर्जा, तंखा आदि हैं । खन्ना उन पर पूरी तरह लट्टू है । लेकिन मालती मेहता के पौरुष के प्रति उस समय आकर्षित हो जाती हैं जब मेहता पठान के भेष में उन्हें जबरदस्ती उठा लेने की चुनौती देते हैं । शिकार में जाते समय मेहता को जंगली महिला की सहानुभूति मिलती है तो मालती ईर्ष्यान्वित होती है । उससे मेहता मालती की ओर आकर्षित नहीं हो पाते । मालती मेहता की ओर जितना आगे बढ़ती है, मेहता उतना पीछे हट जाते हैं ।

Scanned by TapScanner

एक बार खन्ना मालती से कह देते हैं -'' अब तक मैंने तुम्हारे पीछे हजारों लुटा दिए ।'' मालती व्यंग्य भरा उत्तर देती है-'' मैं रूपवती हूँ । तुम ही मेरे अनेक चाहनेवालों में हो । यह मेरी कृपा थी कि जहाँ मैं औरों के उपहार लौटा देती थी, तुम्हारी सामान्य से सामान्य चीजें भी धन्यवाद के साथ स्वीकार कर लेती थी ।'' वे धन से उन्मत्त न होने की चेतावनी देती हुई कहती हैं-'' धन ने न आज तक किसी नारी के हृदय पर विजय पाई और न कभी पाएगी ।''

मालती खन्ना से प्रेम नहीं करती । पर जब मेहता आरोप लगाते हैं कि मिसेज खन्ना मालती के कारण दु:खी हैं और मालती उन पति-पत्नी में झगड़े का कारण बनती है, तो मालती कड़ा जवाब देती है -''आपने यह अनुमान कैसे लगा लिया कि मैं खन्ना और गोविंदी के बीच आना चाहती हूँ ।'' वह खन्ना के प्रति अपना विचार इस प्रकार स्पष्ट कर देती है -''मैं खन्ना को अपनी जूतियों की नोंक के बराबर भी नहीं समझती ।''

मेहता से खिन्न होकर वे कहती हैं -'' आपको मुझ पर आक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं है ।''

मालती मधुमक्खी की तरह है । वे मेहता की सेवा, नि:स्वार्थ -भावना, वीरता, आदर और आदर्श से प्रभावित होकर उन्हें चाहने लगती है । पर मेहता कोई हरा संकेत नहीं देते । वे मालती के संबंध में अपना विचार स्पष्ट करते हुए उनसे कहते हैं -'' तुम सब कुछ कर सकती हो ; बुद्धिमती हो ; चतुर हो ; प्रतिभावान हो ; दयालु हो ; चंचल हो, स्वाभिमानी हो, त्याग कर सकती हो; लेकिन प्रेम नहीं कर सकती ।'' जब मेहता मालती को स्वीकार करना चाहता है, तब मालती विवाह -बंधन में बंध जाना नहीं चाहती । वे लोकहित के लिए व्यापक क्षेत्र में बंधन-मुक्त होकर काम करना चाहती हैं । अपने संपूर्ण जीवन को समाज के लिए समर्पित कर देने की भावना विकसित हो जाने के बाद वे विवाह के सीमित और स्वार्थपूर्ण दायरे को ठुकरा देती हैं ।

विकसनशील चरित्र - पहले मालती की दृष्टि परिवार तक, धन-उपार्जन तक सीमित थी । बदलती परिस्थिति उनके मानसिक धरातल को व्यापक बना देती है । शारीरिक सौन्दर्य और ठाटबाट से दृष्टि हटकर परहित और परसेवा में केन्द्रित हो जाती है । वे नागरिक -जीवन की सीमा से निकल कर ग्रामीण क्षेत्र के लोगों के लिए दु:ख दैन्य निकटता से समझने लगती हैं । वे उनके विकास के लिए प्रयत्न करती हैं । वे जान जाती हैं कि शहरी सभ्य महिलाएँ सब कुछ अपने भोग -विलास के लिए चाहती हैं, पर ग्रामीण महिलाएँ त्यागमय जीवन बिताती हैं । मालती ग्रामीण महिलाओं के उदात्त -विचारों से प्रेरित होकर आत्म -विस्तार करती हैं । मेहता मालती के संबंध में कहते हैं -'' वह(मालती) आग में पड़कर चमकने वाली वस्तु है ।''

Scanned by TapScanner

मेहता अपने प्रेम को खूँखार शेर बताते हैं तो मालती कहती है-" अगर प्रेम खूँखार शेर है तो मैं उससे दूर ही रहूँगी । प्रेम देह की वस्तु नहीं, आत्मा की वस्तु है । वह संपूर्ण आत्म-समर्पण है ।"

अविवाहित रहने का संकल्प करने वाली - मालती मेहता को पैसों की तंगी के समय अपने घर ले जाती हैं ; उनके किराये चुका देती हैं, पर उनसे विवाह करना नहीं चाहतीं ; वे अपना फैसला सुनाती हैं -" तुम मेरे पथ-पदर्शक हो ; मेरे देवता हो ; गुरु हो । यह वरदान मेरे जीवन को सार्थक करने को काफी है । यह मेरी पूर्णता है ।" वे मानती हैं कि मित्र बनकर रहना स्त्री-पुरुष बन कर रहने से कहीं सुखकर है । वे मेहता को प्रेरित करती हुई कहती हैं - 'संसार को तुम जैसे साधकों की जरूरत है, जो अपने पथ को इतना फैला दे कि सारा संसार अपना हो जाए ।" विवाहित जीवन की अपेक्षा अविवाहित जीवन में वे सफलता की किरणें देख पाती हैं ।

नेतृत्व लेने का गुण - मालती समाज में नेतृत्व लेने की योग्यता रखती है । वे नगर - कांग्रेस कमेटी की सभानेत्री चुनी जाती हैं । उनमें क्रांतिकारी चेतना भी है । इसलिए वे सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लेकर एक बार जेल भी जाती हैं ।

स्त्री के समान अधिकार की पक्षधर - मालती स्त्री के समान अधिकार संबंधी बहस में भाग लेती हैं । वे कहती हैं -" फिर अभी यह कौन जानता है कि स्त्रियाँ जिस रास्ते पर चलना चाहती हैं, वही सत्य है । संभव है, आगे चलकर हमें अपनी धारणा बदलनी पड़े ।"

सेवा-भाव - मालती ग्रामीण लोगों के संपर्क में आकर समझ जाती हैं कि उनमें लगन, समर्पण-वृत्ति श्रेय के प्रति सम्मान, सरलता है, जो शहरी लोगों के पास नहीं है । वे उनकी सेवा करने को परम कर्त्तव्य समझती हैं । वे गोबर के बेटे को चेचक निकलने पर न केवल उसकी चिकित्सा करती है, बल्कि माँ-जैसी सेवा भी करती हैं । वे गाँव में सेवा के लिए पहुँचती हैं तो गाँव की स्त्रियाँ उनकी तारीफ करती है ।

मालती को लगता है कि समाज में शोषण का आतंक फैला हुआ है । गाँव में अंधविश्वास, धर्म-शोषण, आर्थिक शोषण, स्वार्थांधता है, जिनको दूर करना उचित है । इसलिए वे सामाजिक परिवर्तन लाने को कटिबद्ध हो जाती है । वे मेहता से कहती है -"अपनी विद्या और बुद्धि जोर के साथ उसी रास्ते पर ले जाओ । मैं भी तुम्हारे पीछे चलूँगी । अपने साथ मेरा जीवन भी सार्थक कर दो ।"

मालती समाज सेवा का आदर्श अपनाने पर भी उसे व्यावहारिक नहीं बना पाती है । लेकिन वे एक स्वाभिमानी और पुरुष -प्रधान समाज में एक प्रेरणादायक पात्र के रूप में अपना विशिष्ट स्थान बना लेती हैं ।

Scanned by TapScanner

❋ सिलिया :

सिलिया चमारिन है और ब्राह्मण मातादीन के साथ रहती है । वह उसकी ब्याहता नहीं -रखैल है । मातादीन सिलिया का यौन -शोषण करता है, जिसे वह अपना अधिकार मानता है । वह अपनी जाति को सुरक्षित रखने के लिए सिलिया के हाथ का खाना नहीं खाता ।

सिलिया मेहनत -मजदूरी करके अपना पेट पालती है । मातादीन के घर उसे केवल खाने - पहनने की छूट है । अनाज में हाथ लगाने का अधिकार उसे नहीं मिलता है । दुलारी साहुकारनी को उसका बकाया चुकाने के लिए जब वह कोई सेरभर अनाज ढेर में से निकालकर दे देती है, तब मातादीन झपट आता है और उससे पूछता है कि तू कौन होती है मेरा अनाज देनेवाली ? सिलिया पूछती है -'' तुम्हारी चीज में मेरा कुछ अख्तियार नहीं है ?'' मातादीन साफ-साफ सुना देता है कि तुम्हें कोई अख्तियार नहीं है । काम करने के लिए खाती है । अगर तुझे परता न पड़ता हो तो कहीं चली जा ।

सिलिया यह अपमान सह जाने को विवश है । सिलिया समझती है कि वह ब्याहता न होकर भी संस्कार और व्यवहार में तथा मनोभावना में ब्याहता है । मातादीन चाहे उसे मारे या काटे । उसे दूसरा आश्रय नहीं है, दूसरा अवलंब नहीं है ।

वह भाग्य और कर्म पर पूरा भरोसा करके अपने जातिगत शोषण का वह विरोध न करके उसे चुपचाप सह जाती है । यहाँ तक कि उसकी माँ उसे अपने साथ ले जाना चाहती है, धमकाती है, पीटती है । पर बाप के पैर पकड़कर विनती करती है -''उसका घर लेकर तुम्हें क्या मिला ? अब तो वह भी मुझे न पूछेगा । लेकिन पूछे, न पूछे, रहूँगी तो उसी के साथ । वह मुझे चाहे भूखा रखे, चाहे मार डाले, पर उसका साथ न छोड़ूँगी । उसकी सांसत कराके छोड़ दूँ । मर जाऊँगी, पर हरजाई न बनूँगी । एक बार जिसने बांहे पकड़ ली, उसी की रहूँगी ।'' उसमें न अपमानबोध है न कोई अनुशोचना । फिर मातादीन जब कहता है कि मैं तेरा न मुँह देखूँगा। मेरा तुझ से कोई वास्ता नहीं है, तब वह मातादीन से पूछती है -'' वास्ता कैसे नहीं है ? जो रस्सी तुम्हारे गले में पड़ गई है, उसे तुम लाख चाहो नहीं छोड़ सकते और न मैं तुम्हें छोड़कर कहीं जाऊँगी । मजूरी करूँगी, भीख मांगूँगी, लेकिन तुम्हें न छोड़ूँगी ।''

उसके बाद धनिया और होरी उसे अपने घर में शरण देते हैं । वहीं उसके एक बेटा होता है । वह सोना को बताती है कि उसने मातादीन की जितनी सेवा की है, उसका फल उसे जरूर मिलेगा । वह सोना से कहती है-'' अभी मान-मरयाद के मोह में वह चाहे मुझे छोड़ दे, लेकिन देख लेना, फिर दौड़ा आएगा ।'' अपने धर्म पर उसे पूरा भरोसा है । वह कहती है-'' अपना-अपना धरम अपने -अपने साथ है । वह अपना धरम तोड़ रहा है, तो मैं अपना धरम क्यों तोड़ूँ ?''

सिलिया बहुत समझदार है । वह सोना के होनेवाले पति और उसके बाप गौरी मेहता के सामने सोना की प्रशंसा करके उन्हें बिना दहेज शादी पक्की करने को मना लेती है ।

Scanned by TapScanner

एक बार मातादीन होरी के हाथों दो रुपया सिलिया के लिए भेजता है । सिलिया इस खुशी को बांटने रात में नदी नाले पार करके सोना के घर पहुँच जाती है । मथुरा से एकांत में उसकी भेंट होती है । मथुरा के प्रेम निवेदन को वह ठुकरा नहीं सकती है । तो दोनों प्रेम के दुर्बल मुहूर्त में पहुँच जाते हैं । सिल्लो का मुँह मथुरा के मुँह के पास आ जाता है और दोनों की साँसें और आवाज और देह में कंपन होती है कि सहसा सोना की आवाज सुनाई पड़ती है । परिणाम स्वरूप सिलिया चारित्रिक पतन से बच जाती है ।

मातादीन प्रायश्चित करके अपनी जाति में पुन: मिल जाता है । पर उसे अपने पुत्र के प्रति मोह सिलिया के साथ रहने को विवश कर देता है । मातादीन -सिलिया का पुनर्मिलन होता है ।

सिलिया यहाँ दलित -नारी का प्रतिनिधित्व करती है । उसे अपनी बिरादरी से तथा अपने परिवार से अलग रहने में कोई अनुशोचना नहीं है । वह अपनी अस्मिता और अस्तित्व के प्रति कतई जागरूक नहीं है । फिर भी अपने प्रेम की निश्छलता और सेवा-धर्म पर विश्वास के फल-स्वरूप उसे प्रेम में सफलता मिलती है ।

1.8 व्याख्याएँ :

१. आसामियों से वह हँसकर बोल लेते थे । यही क्या कम है ? सिंह का काम तो शिकार करना है, अगर वह गरजने और गुर्राने के बदले मीठी बोली बोल सकता, तो उसे घर बैठे मनमाना शिकार मिल जाता, शिकार की खोज में जंगल में न भटकना पड़ता ।

संदर्भ – जमींदार रायसाहब बहुत लोकप्रिय हैं । उनकी जमींदारी व्यवस्था पूर्ववत् चली आ रही थी । किसी को रियायत नहीं दी जाती थी । लगान वसूल किया जाता था, डाँड और बेगारी ली जाती थी । लोग इसे व्यवस्था का अंग मानकर स्वाभाविक रूप से सह जाते थे । अगर कुछ बदनामी होती थी, वह मुख्तारों के सिर जाती थी । रायसाहब की आमदनी और अधिकार में कमी नहीं आती थी, उनका यश बढ़ता जाता था ।

व्याख्या - असामियों से जो लेना है । उसे जमींदार रायसाहब के मुख्तार ले लेते हैं । लेकिन रायसाहब धूर्त हैं । वे असामियों से हँसकर बात कर लेते हैं । इससे असामी कृतकृत्य हो जाते हैं । इस हँसी को भी बहुत बड़ी कृपा मान लेते हैं ।

२. जमींदार सिंह जैसे हैं । सिंह का काम है शिकार करना । जमींदार का काम है जमींदारी को चलाना, लगान वसूल करना, डाँड लेना, बेगारी लेना आदि । यह कार्य कोई जमींदार कठोर वचन बोलकर कर सकता है या मीठे वचन से कर सकता है । कठोर वचन और कठोर व्यवहार सिंह का

Scanned by TapScanner

गरजना, गुर्राना जैसा है । अगर वह मीठे वचन से घर बैठे आराम से सारा काम आसामियों से निकाल सकता है तो यह घर बैठे शिकार मिल जाता है । घर बैठे शिकार मिल जाने से सिंह को शिकार की खोज में जंगल में जाना नहीं पड़ता । जैसे रायसाहब अपना सारा काम मुख्तारों के माध्यम से करा लेते हैं । बदनामी उनके सिर डाल स्वयं सबके श्रद्धा भाजन बने रहते हैं । उनकी कीर्ति बढ़ती जाती है । वे बहुत चालाक हैं । लक्षण कह रहे हैं कि बहुत जल्द हमारे वर्ग की हस्ती मिट जानेवाली है । मैं उस दिन का स्वागत करने को तैयार बैठा हूँ । ईश्वर वह दिन जल्द लाएँ । वह हमारे उद्धार का दिन होगा । हम परिस्थितियों के शिकार बने हुए हैं । यह परिस्थिति ही हमारा सर्वनाश कर रही है और जब तक संपत्ति की यह बेड़ी हमारे पैरों से न निकलेगी, जब तक यह अभिशाप हमारे सिर पर मंडराता रहेगा हम मानवता का वह पद न पा सकेंगे, जिस पर पहुँचना ही जीवन का अंतिम लक्ष्य है ।

संदर्भ – जमींदार रायसाहब जानते हैं कि समाज में जमींदारों की शोषण प्रवृत्ति बढ़ गई है और धीरे-धीरे समाज में इसके प्रति विरोध और असंतोष बढ़ रहा है । इसलिए वे परिस्थिति की मांग के अनुरूप अपने को परिवर्तन करते हैं और जमींदारी प्रथा के उन्मूलन को स्वाग करने को तैयार हो जाते हैं ।

व्याख्या – रायसाहब का विचार है कि अभी समाज में जमींदारी प्रथा के खिलाफ आवाज उठने के लक्षण दिखाई देने लगे हैं यदि आंदोलन हुआ तो हमारी यह प्रभुता जल्दी समाप्त हो जाएगी । रायसाहब खुद भी यह परिवर्तन चाहते हैं । वे भगवान से प्रार्थना करते हैं कि जल्द से जल्द वह परिवर्तित दिन आएँ । वे मानते हैं कि परिस्थिति का का दास बनकर हम जमींदार हैं और आसामियों पर जो शोषण हो रहा है, उसे करने के को हम मजबूर हैं । इससे हमारा सर्वनाश हो रहा है ।

३. राय साहब मानते हैं कि हमारा अंतिम लक्ष्य है - मानवता का पद पाना । यह तब तक संभव नहीं होगा, जब तक हम सिर पर जमींदार होने का अभिशाप ढोते रहेंगे और जमींदारी को संपत्ति की बेड़ी हमारे पैरों पर पड़ी रहेगी । यह संपत्ति हमारे लिए अभिशाप है । यह हमें मानवता का ऊँचा पद नहीं दे पाती । हम अपने अस्तित्व की रक्षा करने के लिए प्रजा का शोषण करने को मजबूर होते हैं । हम सच्चे इनसान बन नहीं पाते हैं । जब यह जमींदारी प्रथा समाप्त हो जाएगी - वह दिन हमारे उद्धार का दिन होगा । हम भी मुक्ति की सांस लेंगे । हम उस दिन सच्चे अर्थ में मानवता के उपासक बन जाएँगे । विपन्नता से इस अथाह सागर में सोहाग ही वह तृण था, जिसे पकड़े हुए वह सागर को पार कर रही थी । इन असंगत शब्दों ने यथार्थ के निकट होने पर भी मानो झटका देकर उसके हाथ से वह तिनके का सहारा छीन लेना चाहा । बल्कि यथार्थ के निकट होने के कारण ही उनमें इतनी वेदना शक्ति आ गई थी । काना कहने से काने को जो दु:ख होता है, वह क्या दो आँखों वाले आदमी को हो सकता है ?

Scanned by TapScanner

संदर्भ – होरी रायसाहब के गाँव जाने की तैयारी कर रहा है । हँसी-मजाक में वह पत्नी धनिया को बताता है कि मर्द साठे पर पाठे होते हैं । धनिया यथार्थ का अनुभव करके कहती है कि तुम -जैसे मर्द साठे पर पाठे नहीं होते । होरी भी इस यथार्थ को स्वीकार करता हुआ कहता है - साठ तक पहुँचने की नौबत न आने पाएगी धनिया ! इसके पहले ही चल देंगे ।

यहाँ लेखक होरी के चले जाने के बाद यह सुनकर धनिया की मन:स्थिति क्या होती है उसका वर्णन करते हैं -

व्याख्या – होरी का यह कथन -साठ तक पहुँचने की नौबत नहीं आएगी - धनिया के हृदय में आतंकमय कंपन उत्पन्न कर देता है । उसके लिए आर्थिक दुरवस्था और विपन्नता एक अथाह सागर जैसी थी । भारतीय नारी होने के नाते धनिया की मंगल-कामना व्रत नारीत्व की तपस्या -सुहाग उसे सहारा देने वाला तृण था । जिसके आधार पर वह इन कठिनाइयों को पार करना चाहती थी ।

४. होरी ने जो कुछ हँसी -मजाक में कह दिया, वह यथार्थ के निकट था । होरी की उम्र चालीस से अधिक न होने पर भी जीवन -संघर्ष में वह जर्जर हो चुका था । असमय बुढ़ापा ने उसे घेर लिया था । लेकिन यह यथार्थ सत्य धनिया की भावना को एक झटका देता है कि लगता है वह तृण का सहारा भी और नहीं रहने वाला है और यह यथार्थ उसके हाथ से तृण के सहारे को छीन लेगा । अर्थात् उसके कहीं साठ साल की उम्र पार करने से पहले होरी जीवन संघर्ष से हारकर संसार से बिदा लेना न पड़ जाए । यही सोचकर धनिया का हृदय वेदना से भर जाता है । वह पति की मंगल कामना और दीर्घायु कामना करके व्याकुल हो उठती है । यह स्वाभाविक है कि हमें सत्य अधिक प्रभावित और आंदोलित करता है । काने को काना कहने से उसे अपार कष्ट होगा, क्योंकि व्यापार सत्य है । आँखोंवाले से काना कहने वह हँस देगा, क्योंकि वह असत्य है । होरी का कहना सत्य था, इसलिए धनिया को वह अपार कष्ट देता है । उसका संपूर्ण जीवन प्रकृति से स्थायी सहयोग है - वृक्षों में फल लगते हैं, उन्हें जनता खाती है ; खेती में अनाज होता है, वह संसार के काम आता है ; गाय के थन में दूध होता है, वह खुद पीने नहीं जाती, दूसरे पीते हैं; मेघों से वर्षा होती है, उससे पृथ्वी तृप्त होती है । ऐसी संगति में कुत्सित स्वार्थ के लिए स्थान कहाँ ? होरी किसान था और किसी को जलते हुए घर में हाथ सेंकना उसने सीखा ही न था ।

संदर्भ – भोला होरी को गाय उधार पर देने को राजी हो जाता है । उसके पास भूसा नहीं है, इसलिए वह अब होरी से केवल दस-बीस रुपए भूसे के लिए भी नकद चाहता है । एक मनुष्य के रूप में होरी में कुछ स्वार्थ भावनाएँ हैं लेकिन एक किसान के रूप में उसका जीवन त्याग से भरा है ।

Scanned by TapScanner

व्याख्या - हीरा अपनी स्वार्थ मनोवृत्ति का परिचय देता था । कुछ खरीदते समय मोल-तोल करना ऋण चुकाते समय कुछ ब्याज छुड़ाने के लिए महाजन की चिरौरी करना, जब तक पक्का विश्वास न हो जाए तब तक किसी के फुसलाने में नहीं आना उसके स्वाभाविक गुण है ।

५. लेकिन उसका संपूर्ण जीवन प्रकृति के साथ सहयोग पूर्वक आगे बढ़ता है । वह प्रकृति की तरह परोपकारी है । वृक्ष में फल लगते हैं । वृक्ष स्वयं फल नहीं खाता । दूसरे खाते हैं ; खेत में उपजा अन्न प्राणी मात्र खाता है । गाय अपना दूध खुद नहीं पीती दूसरे पीते हैं । बादल वर्षा करके पृथ्वी को तृप्त करते हैं । प्रकृति के इन तत्वों के पास कुत्सित स्वार्थ के लिए स्थान नहीं है । ये परोपकार का जीवन व्रत के रूप में अपनाते हैं । किसान की प्रकृति के इन तत्वों की तरह परोपकारी है ।

होरी किसान था । परोपकार करना उसका धर्म था । स्वार्थांधता की गंध उसके पास नहीं आती थी । दूसरों की विपत्ति से फायदा उठाना वह नहीं जानता था । इसलिए भोला की विपत्ति का फायदा उठाकर उधार कर गाय ले लेना वह पसन्द नहीं करता है । विवाह के प्रभात में लालसा अपनी गुलाबी मादकता के साथ उदय होती है । और हृदय के सारे आकाश को अपने माधुर्य की सुनहरी किरणों से रंजित कर देती है । फिर मध्यान्ह का प्रखर ताप ऊष्म है, क्षण-क्षण पर बगूले उठते हैं और पृथ्वी कांपने लगती है । लालसा का सुनहरा आवरण हट जाता है और वास्तविकता अपने नग्न रूप में सामने आ खड़ी होती है । उसके बाद विश्राममय संध्या आती है, शीतल और शांत जब हम थके हुए पथिकों की भाँति दिन भर की यात्रा का वृतांत कहते और सुनते हैं । तटस्थ भाव से , मानो हम किसी ऊँचे शिखर पर जा बैठे हैं जहाँ नीचे का जनरव हम तक नहीं पहुँचता ।

संदर्भ - दमड़ी वंसौर से पुनिया झगड़ती है तो हीरा उसे पीटता है । होरी हीरा को रोकता है । फिर अपने दरवाजे पर आकर धनिया के साथ अपने वैवाहिक जीवन की मार-पीट और मन-मनुहार का प्रसंग छेड़ता है । यहीं लेखक वैवाहिक जीवन पर अपने दृष्टिकोण को व्यक्त करते हैं ।

व्याख्या - वैवाहिक जीवन का प्रारंभ दिवस का उषाकाल जैसा है । उषा के आगमन से सारा आकाश सूरज की सुनहरी किरणों से रंजित हो जाता है । गुलाबी मादकता लिए उषा आती है और वह मन में नई लालसा भरदेती है । उसी प्रकार विवाह का जीवन -आकाश में उषाकाल की तरह होता है । पति-पत्नी के जीवन -आकाश में आशा की नई किरणें फूटती हैं ; नई-नई अभिलाषाएँ जन्म लेती हैं ! प्रेम की गुलाबी मादकता भर जाती है ; मधुरता भर जाती है ।

६. जिस प्रकार मध्यान्ह में सूर्य के प्रहार ताप से धरती तप्त हो जाती है, बगूले उठते हैं तो धरती कांप जाती है, उसी प्रकार वैवाहिक जीवन के मध्यान्ह में सपनों के स्थान पर वास्तविकता का अनुभव होता है, यथार्थ का सामना करना पड़ता है । उसी प्रकार विवाह के बाद गृहस्थी संभालनी पड़ती है । जीवन संग्राम में संघर्ष करना पड़ता है । दु:ख-दर्द झेलना पड़ता है । सपनों का सुनहरा आवरण हट

Scanned by TapScanner

जाता है और यथार्थ की तेज रश्मियाँ सहनी पड़ती है ।

उसके बाद शाम आती है । लोग संध्या के समय घर लौटते हैं । दिनभर के श्रम के बाद थकावट मिटाते हैं । शाम शीतल और शांति देती है । दो श्रांत पथिक शाम को थकान मिटाते हुए अपने-अपने अनुभवों के वृत्तांत सुनते - सुनाते हैं । उसी प्रकार वैवाहिक जीवन के सांयकाल में बुढ़ापे में पति-पत्नी जीवन -अनुभव को स्मरण करते हैं, हँसी -गम, सफलता -विफलता के वृत्तांत की चर्चा करते हैं । थकान मिटाते जीवन के उच्च शिखर पर बैठकर तटस्थ भाव से बीते हुए उस अतीत को देखते हैं । कैसे उनका कोई सरोकार नहीं, कोई आकर्षण नहीं है । वे अब दूसरों के जीवन संघर्ष की ओर ध्यान नहीं देते । केवल अपने अंतिम दिन गिनते हुए चुप हो जाते हैं ।

उनकी दृष्टि में अभी उसके यौवन के फूल ही लगे थे । जब तक फल न लग जाएँ उस पर ढेले फेंकना व्यर्थ की बात थी और किसी ओर से प्रोत्साहन न पाकर उसका कौमार्य उसके गले में चिपटा हुआ था । झुनिया का वंचित मन जिसे भाभियों के व्यंग्य और हास-विलास ने लोलुप बना दिया था, उसके कौमार्य पर ही ललचा उठा और इस खुमारी में पता खड़कते ही किसी सोते हुए शिकारी की तरह यौवन जाग उठा ।

संदर्भ - भोला के घर से गाय लेकर गोबर आया, तो उसे छोड़ने झुनिया आधे रास्ते तक आई । रास्ते में झुनिया ने उसके साथ हास-परिहास करके उसके सोते हुए यौवन को जगा दिया । यौवन संबंधी दोनों के अनुभव अलग-अलग थे, उस पर प्रकाश डालते हुए लेखक कहते हैं -

व्याख्या - गोबर किशोर था । अब तक उसके साथ केवल भाभियाँ ठिठोली करती थीं जो केवल सरल विनोद तक ही सीमित रह जाती थी । उनकी दृष्टि में गोबर किशोर था और उसमें केवल यौवन के फूल लगे थे । यौवन परिपक्व होकर फल नहीं बने थे । जिस प्रकार कोई पेड़ से फल पाने के लिए उस पर ढेले फेंकता है, पर फूल लगते समय ढेले नहीं फेंकता, उसी प्रकार परिपक्व यौवन न आने पर गोबर से कोई प्रेम की बात नहीं करती थी । गोबर को किसी नारी से प्रेम के लिए प्रोत्साहन न मिलने से उसका यौवन उद्दीप्त नहीं हो पाता था, न वह हँसी -मजाक का उत्तर दे पाता । मानो कौमार्य उसके गले से चिपटा हुआ रह गया था । न वह जाता था, न यौवन की मादकता उसमें आ पाती थी ।

७. लेकिन झुनिया का विवाह हो चुका था । वह विधवा हो चुकी थी । उसका भूखा मन प्रेम चाहता था । भाभियों के हास-परिहास से उसका मन प्रेम के लिए लोलुप्त हो उठा । अब वह गोबर को पास पाकर प्रेम करने के लिए उससे प्रेम भरी बातें करने लगी । जिस प्रकार शिकार की कोई आहट पाकर सोया हुआ शिकारी जानवर जाग जाता है, उसी प्रकार झुनिया के प्रेम -निवेदन की प्रतिक्रिया में गोबर का सुप्त यौवन जाग उठता है । उसमें भी प्रेम की ललक उत्पन्न हो जाती है । धन को आप किसी उपाय से बराबर फैला सकते हैं । लेकिन बुद्धि को, चरित्र को और रूप को, प्रतिभा को और बल को

Scanned by TapScanner

बराबर फैलाना तो उसकी शक्ति के बाहर है । छोटे-बड़े का भेद केवल धन से ही तो नहीं होता । मैंने बड़े-बड़े धन-कुबेरों को भिक्षुकों के सामने घुटने टेकते देखा है, और आपने भी देखा होगा । रूप के चौखटे पर बड़े-बड़े महीप नाक रगड़ते हैं । क्या यह सामाजिक विषमता नहीं है ?

संदर्भ – रायसाहब के धनुषयज्ञ के अवसर अपनी मित्र मंडली के सदस्य मेहता, ओंकारनाथ, तंखा, मिर्जा, खुर्शीद आदि सम्मिलित होकर साम्यवादी विचार पर चर्चा कर रहे हैं । डॉ. मेहता अपना विचार इस प्रकार रखते हैं -

व्याख्या – धन पर सभी का समान अधिकार होने के विचार से आप किसी भी उपाय से धन को लोगों में बराबर बांट सकेंगे । लेकिन बुद्धि -चरित्र, रूप, प्रतिभा जैसे जन्मजात गुणों और प्राकृतिक शक्तियों को लोगों में बराबर बांट देना मनुष्य की शक्ति के बाहर है, क्योंकि ये सब ईश्वर प्रदत्त गुण हैं । अर्थात् इनके कारण समाज में अधिक बुद्धिमान, कम बुद्धिमान, चरित्रवान, चरित्रहीन, रूपवती , कुरूप, प्रतिभावान - मंदबुद्धि आदि रहेंगे । इन गुणों के कारण लोग बड़े या छोटे के रूप में गिने जाएँगे । अर्थात् धन के अलावा भी अन्य गुणों के कारण छोटे-बड़े का भेद रहेगा । आप लोग समाज में देखते हैं कि बड़े-बड़े धनवान व्यक्ति भी साधु -संतों , भिक्षुओं के सामने घुटने टेकते हैं, हार जाते हैं, उनकी महानता स्वीकार करते हैं । बड़े-बड़े राजा भी प्रेम पाने के लिए रूपवती नारी के चरणों में गिड़गिड़ाते हैं । यह भी एक प्रकार की सामाजिक विषमता है । ज्ञान का या सौन्दर्य का समाज में समान बंटन संभव नहीं है । केवल धन का सम बंटन होने से छोटे-बड़े का भेद नहीं मिटता । ईश्वर प्रदत्त जन्मजात गुणों की मात्रा से समाज में छोटे-बड़े रहना अनिवार्य है ।

८. विवाह को मैं सामाजिक समझौता समझता हूँ और उसे तोड़ने का अधिकार न पुरुष को है, न स्त्री को । समझौता करने के पहले आप स्वाधीन हैं, समझौता हो जाने के बाद आपके हाथ कट जाते हैं ।

संदर्भ – मेहता, खन्ना, मालती आदि विवाह , तलाक, मुक्त भोग आदि पर चर्चा करते हैं तो मेहता अपने विचार स्पष्ट रूप से व्यक्त करते हैं - मेहता कहते हैं कि मुक्त भोग आत्मा के विलास में बंधक नहीं होता । विवाह आत्मा को और जीवन को पिंजरे में बंद कर देता है । विवाह के संबंध में वे स्पष्ट करते हैं कि -

व्याख्या – विवाह एक सामाजिक समझौता है । पुरुष और नारी जीवन भर साथ रहने का विचार इस प्रकार विवाह बंधन में बंध जाते हैं । इसमें दोनों का एक दूसरे पर विश्वास रहता है । प्रतिज्ञा रहती है । उसके बाद पति-पत्नी में से किसी को वह विवाह बंधन तोड़ने का अधिकार नहीं रहता । इससे समाज की व्यवस्था अस्तव्यस्त हो जाएगी । इसलिए विवाह के लिए समझौता करने को व्यक्ति पहले स्वतंत्र है । वह विवाह करेगा या नहीं, यह उसके निर्णय पर निर्भर है । एक बार विवाह करने का

Scanned by TapScanner

निर्णय ले लेने के बाद व्यक्ति परतंत्र हो जाता है । वह लाचार है, उसे तोड़ने का यानी तलाक देने का अधिकार उसके हाथ में नहीं रहता ।

९. सामने जो पर्वतमाला दर्शन -तत्व की भाँति अगम्य और अत्यंत फैली हुई मानो ज्ञान का विस्तार कर रही हो, मानो आत्मा उस ज्ञान को उस प्रकाश को उस अगम्यता को, उसके प्रत्येक विराट रूप में देख रही हो । दूर के एक बहुत ऊँचे शिखर पर एक छोटा-सा मंदिर था, जो उस अगम्यता में बुद्धि की भाँति ऊँचा, पर सोया हुआ-सा खड़ा था, मानो वहाँ तक पर मारकर पक्षी विश्राम लेना चाहता है और कहीं स्थान नहीं पाता ।

संदर्भ – डॉ. मेहता मालती को अपने साथ लेकर शिकार खेलने जाते हैं तो जंगल में एक काली औरत बड़ी सहृदयता दिखाकर मेहता को उसकी झोंपड़ी तक ले जाती है । वहाँ बैठकर सामने की पर्वतमाला और प्राकृतिक सौन्दर्य को देखकर डॉ. मेहता दार्शनिक चिंतन में खो जाते हैं ।

व्याख्या – मेहता जंगल के स्वच्छ जीवन से बहुत प्रभावित होते हैं । सामने पर्वतमाला फैली हुई थी । मेहता को लगता है कि दर्शन -तत्व जिस प्रकार अगम्य और बहुत व्यापक है उसी प्रकार यह पर्वतमाला का विस्तार कर रही हो । मेहता को लगता है कि उनकी आत्मा निराकार परमात्मा के विराट रूप को पर्वतमाला के रूप में प्रत्यक्ष देख रही हो । वे अब परमात्मा संबंधी ज्ञान की, उनके प्रकाश की, उनकी अगम्यता को इस स्थान पर बैठकर पर्वतमाला में प्रत्यक्ष देख रहे हो । दूर के एक ऊँचे शिखर पर एक छोटा-सा मंदिर दिखाई पड़ता था । मेहता को लगता है कि पर्वतमाला के रूप में विराजमान परम तत्व की अगम्यता में बुद्धि के रहस्य को जानने के लिए खोया -खोया खड़ा था । मेहता सोचता है कि उनकी बुद्धि रूपी पक्षी परों से उड़ान भरकर मंदिर की चोटी पर विश्राम करने पहुँचता है पर वहाँ उसे विश्राम करने के लिए कोई स्थान नहीं मिलता । वह निराश हो जाता है । मनुष्य की सीमित बुद्धि असीम का ज्ञान प्राप्त करने असमर्थ रहकर अनमना हो जाती है ।

१०. वह आफत की मारी ,व्यंग्य बाणों से आहत और जीवन के आघातों से व्यथित किसी वृक्ष की छांह खोजती -फिरती थी और उसे एक भवन मिल गया था, जिसके आश्रय में वह अपने को सुरक्षित और सुखी समझ रही थी पर आज वह भवन अपना सारा सुख-विलास लिए अल्लादीन के राज महल की भाँति गायब हो गया था और भविष्य एक विकराल दानव के समान इसे निगल जाने को खड़ा था ।

संदर्भ – पांच माह की गर्भवती झुनिया को अपने घर पर छोड़कर गोबर जब पलायन करता है तो ऐसी स्थिति में झुनिया की मन:स्थिति के संबंध में लेखक बता रहे हैं -

व्याख्या – झुनिया विधवा हो जाने से हतभागिनी हो गई थी । पिता के घर में रहते समय भाभियों के व्यंग्य बाणों से वह आहत हो गई थी । जीवन में अकेली हो जाने के बाद वह मानसिक

Scanned by TapScanner

आघात सहकर पीड़ित थी । वह किसी पुरुष का साहचर्य चाहती थी जिसके आश्रय में रहकर नारी जीवन को सार्थक कर सकेगी और जीवन की पूर्णता प्राप्त कर सकेगी । इसी समय उससे प्रेम करने के लिए गोबर मिल गया । उससे प्रेम करके उसको पति रूप में अपनाकर अपने को वह सुरक्षित और सुखी मानने लगी । वह गर्भवती हो गई । परिस्थिति का मुकाबला करने का साहस गोबर जुटा नहीं सका । वह झुनिया को अकेली छोड़कर भाग गया । जिस गोबर को वह एक सुरक्षित भवन मान रही थी, वह अब अलादीन के चिराग से उत्पन्न राज महल की भाँति फिर अदृश्य हो गया था । अब उसका भविष्य अनिश्चित और अंधकारमय हो गया । ऐसा लगा कि भविष्य एक विकराल दानव बनकर उसे निगल जाने को उसका अस्तित्व मिटा देने को उद्यत है ।

११. मर्द अपने को क्यों नहीं मिटाता ? औरत से ही क्यों इसकी आशा करता है ? मर्द में वह सामर्थ्य ही नहीं है । वह अपने को मिटाएगा, तो शून्य हो जाएगा । वह किसी खोह में जा बैठेगा और सर्वात्मा में मिल जाने का स्वप्न देखेगा । वह तेज प्रधान जीव है और अहंकार में वह समझ कर कि वह ज्ञान का पुतला है, सीधा ईश्वर में लीन होने की कल्पना किया करता है ।

संदर्भ – कबड्डी खेल की समाप्ति के बाद मिर्जा मेहता के साथ मालती के विवाह का प्रसंग जब उठाते हैं तब मेहता पुरुष और नारी की विशेताओं की चर्चा करके कहते हैं कि नारी करुणा और त्याग की मूर्त है । वह अपने को मिटा कर पुरुष की आत्मा का एक अंश बन जाती है ।

व्याख्या – मेहता कहते हैं कि अब प्रश्न उठता है कि पुरुष करुणा और त्याग की मूर्त बनकर अपने को क्यों नहीं मिटाता, जबकि नारी से यही करने की आशा रखता है ? इसके उत्तर में मेहता कहते हैं कि पुरुष को करुणा और त्याग की भावना की सामर्थ्य नहीं है । यदि वह अपने को मिटाने का प्रयास करेगा, तो वह शून्य हो जाएगा । उसका अस्तित्व समाप्त हो जाएगा । वह कर्म से विरत हो जाएगा । इसका कारण बताते हुए लेखक कहते हैं कि पुरुष तेज प्रधान जीव है । वह अपने को ज्ञान का भंडार समझता है । इसलिए उसमें अहंकार है । यदि वह अपने को मिटाने का प्रयास करेगा, तब वह समाज में रहकर किसी के लिए अपने को नहीं मिटाएगा । वह संसार और समाज से विरक्त होकर आत्म-कल्याण के लिए, मुक्ति के लिए किसी गुफा में जाकर ईश्वर का ध्यान करेगा । ईश्वर में लीन होकर, संसार के जन्म -मृत्यु बंधन से मुक्त हो जाने की कल्पना करेगा ।

१२. स्त्री पृथ्वी की भाँति धैर्यवान है, शांति संपन्न है, सहिष्णु है । पुरुष में नारी के गुण आ जाते हैं । तो वह महात्मा बन जाता है । नारी में पुरुष के गुण आ जाते हैं तो वह कुलटा हो जाती है । पुरुष आकर्षित होता है स्त्री की ओर, जो सर्वांग में स्त्री हो ।

संदर्भ – मिर्जा जब मेहता से कहते हैं कि उनकी शादी मालती से होगी तो इस प्रस्ताव को अस्वीकार करते हुए मेहता नारी के आवश्यक गुणों का वर्णन करते हैं -

Scanned by TapScanner

व्याख्या - नारी पृथ्वी की भाँति धैर्यवान है । कितनी भी विपत्तियाँ, यातनाएँ क्यों न आएँ सभी को धैर्य के साथ सह जाने की सामर्थ्य नारी में है । वह शांति से रहती है । शांति -प्रदान करती है । दु:ख दर्द को अपनी मधुर वाणी से हरण कर लेती है । ये गुण यदि पुरुष में आ जाएँ तो पुरुष महात्मा बन जाएगा । पुरुष में स्वाभाविक रूप से अहंकार है । वह अपने को ज्ञान का भंडार मानता है । उसमें तेज है । ये गुण यदि किसी नारी में आ जाएँगे तब वह उद्वत हो जाएगी । स्वेच्छाचारिणी हो जाएगी और कुल कलंकिनी हो जाएगी । वह जब सर्वांग में धैर्यशील , शांति प्रदायिनी, सहिष्णु , त्यागी, समर्पण भाव सपन्न होगी तो कोई भी पुरुष उसके प्रति आकर्षित होगा ।

ये तर्क प्रस्तुत करने के पीछे मेहता यह कहना चाहते हैं कि मालती में नारी के आवश्यक सद्गुणों का अभाव होने के कारण वह उनसे विवाह करने को तैयार नहीं हैं ।

१३. क्या बाज को चिड़िया का शिकार करते हुए देखकर हंस को शोभा देगा कि वह मानसरोवर की आनन्दमयी शांति को छोड़कर चिड़ियों का शिकार करने लगे और अगर वह शिकारी बन जाए, तो आप उसे बधाई देंगी ? हंस के पास उतनी तेज चोंच नहीं है, उतने तेज पंख नहीं हैं और उतनी तेज आँख नहीं है और उतनी तेज रक्त की प्यास नहीं है । उन अस्त्रों का संचय करने में उसे सदियाँ लग जाएँगी, फिर भी वह बाज बन सकेगा या नहीं इसमें संदेह है ; मगर बाज बने या न बने, वह हंस न रहेगा - वह हंस जो मोती चुगता है ।

संदर्भ - वीमन्स लीग में भाषण देने के अवसर पर डॉ. मेहता पुरुष और नारी के समान अदिकार पर चर्चा करते हुए कहते हैं -

व्याख्या - डॉ. मेहता पुरुष को बाज और नारी को हंस के साथ तुलना करके अपने विचार रखते हैं । वे कहते हैं कि बाज हिंसक पक्षी है । वह शिकारी पक्षी है । शिकार करने के लिए उसके पास वह जन्मजात गुण हैं । उसके पास तेज चोंच है, जिससे वह मांस को आसानी से काट सकता है । वह अपने चंगुल से मजबूती से शिकार को पकड़ सकता है । तेज आँख से दूर से शिकार को देख सकता है, तेज पंख से जल्दी से शिकार के पास पहुँच सकता है । उसमें खून की प्यास है । इसलिए वह शिकार करने में कुशल है ।

हंस मानसरोवर में रहता है । वहाँ उसे आनन्दमयी शांति मिलती है । वहाँ वह मोती चुगता है ।

यदि वह बाज को शिकार करते हुए देखकर स्वयं शिकार करने को लालायित होगा और शिकार करने लगेगा तो यह कार्य उसे शोभा नहीं देगा । दूसरे भी इस कार्य की सराहना नहीं करेंगे ।

बाज के पास शिकार करने के लिए जितने गुण हैं उनको प्राप्त करने के लिए हंस को सदियाँ लग

Scanned by TapScanner

जाएँगी, फिर भी उसे सफलता नहीं मिलेगी । उसका बाज जैसा बनना संदेह जनक है । लेकिन बाज बनने के प्रयास में वह अपना जन्मजात गुण भूल जाएगा । वह फिर मोती चुगने वाला वह मानसरोवर का हंस नहीं रह जाएगा । इधर से और उधर से दोनों तरफ से उसको हानि होगी ।

१४. जिसे संसार दु:ख कहता है वही कवि के लिए सुख है । धन और ऐश्वर्य रूप और बल, विद्या और बुद्धि, ये विभूतियाँ संसार को चाहे कितना ही मोहित कर लें कवि के लिए यहाँ जर भी आकर्षण नहीं है, उसके मोद और आकर्षण की वस्तु तो बुझी हुई आशाएँ और कटी हुई स्मृतियाँ और टूटे हुए हृदय के आँसू हैं । जिस दिन इन विभूतियों में उसका प्रेम न रहेगा, उस दिन वह कवि न रहेगा । दर्शन जीवन के इस रहस्यों से केवल विनोद करता है, कवि उनमें लय हो जाता है ।

संदर्भ – गोविंदी मेहता से अपनी प्रशंसा सुनकर उनसे कहती है कि आपको दार्शनिक न बनकर कवि होना चाहिए था । मेहता कहते हैं कि कोई दार्शनिक हुए बिना कवि नहीं हो सकता । गोविंदी कहती है कि कवि को संसार में केवल दु:ख ही मिलता है । इसका उत्तर देते हुए मेहता कहते हैं -

व्याख्या – मेहता कहते हैं कि जिसे संसार दु:ख मानता है, कवि उसमें सुख का अनुभव करता है । वेदना उसे प्रिय है, वेदना को प्राप्त करने के बाद वह कविता रचना करता है और कवि बन जाता है । संसार और कवि की दृष्टि अलग-अलग है । संसार धन, ऐश्वर्य, सौन्दर्य , बल, विद्या और बुद्धि को महान विभूतियाँ मान कर उन पर मोहित हो जाता है पर कवि इनके प्रति आकर्षित नहीं होता । इनको प्राप्त करने वह कविता की रचना नहीं कर सकता । उसके लिए ये भौतिक सुख काम में नहीं आएँगे । उसके लिए वेदना और करुणा चाहिए । उसके लिए निराशा, दु:ख में विगत सुखद स्मृतियाँ, टूटे हुए हृदय के आँसू चाहिए । ये कविता के आधार हैं । ये कवि की विभूतियाँ हैं । कवि इनसे प्रेम करता है, कविता लिखता है । इनसे यदि उसका प्रेम नहीं रहेगा, वह कविता लिख नहीं सकेगा, फिर और कवि न रहेगा ।

दार्शनिक जीवन के इन दु:खपूर्ण रहस्यों का उद्‌घाटन करता है । पर वह उनसे निस्पृह रहता है । वरन् उनका उद्‌घाटन करके वह सुखी होता है । कवि उनसे प्रभावित होता है । वह अपने हृदय में उनको अनुभव करता है । वह उनमें तल्लीन हो जाता है । उस अनुभूति को कविता का रूप देता है ।

***

Scanned by TapScanner

1.9 अभ्यास प्रश्न:

1. गोदान में दो कथाएँ - गाँव की कथा और शहर की कथा - साथ-साथ चलती हैं, फिर दोनों कथाओं में संबंद्धता और संतुलन पाया जाता है । - समीक्षा कीजिए ।
2. उन्यास -कला की दृष्टि से 'गोदान' उपन्यास की समीक्षा कीजिए ।
3. सिद्ध कीजिए कि गोदान एक राष्ट्रीय प्रतिनिधि उपन्यास है ।
4. 'गोदान' हमारे ग्रामीण जीवन के अंधकार -पक्ष का उद्घाटन करता है -समीक्षा कीजिए ।
5. 'गोदान' भारतीय कृषक की जीवन गाथा है - विवेचन कीजिए ।
6. 'गोदान' का होरी एक व्यष्टि परक पात्र न होकर एक वर्ग प्रतिनिधि है इस कथन की समीक्षा कीजिए ।
7. 'गोदान' उपन्यास के आलोक में भारत की तत्कालीन धार्मिक दशाओं का चित्रण कीजिए ।
8. 'गोदान' के उद्देश्य और संदेश को स्पष्ट कीजिए ।
9. एक अजेय किसान के रूप में गोदान के होरी का चरित्र-चित्रण कीजिए ।
10. धनिया का चरित्र-चित्रण कीजिए ।
11. 'गोदान' में गोबर शोषण और अन्याय के विरुद्ध भरती हुई नई पीढ़ी के विद्रोह और असंतोष का प्रतीक है - इस कथन की पुष्यि कीजिए ।
12. 'मेहता बुद्धिजीवी, आदर्शवादी और कर्मठ व्यक्ति हैं - इस कथन की व्याख्या करते हुए मेहता का चरित्र-चित्रण कीजिए ।
13. 'मालती' बाहर से तितली और भीतर से मधुमक्खी है- इस कथन की व्याख्या करते हुए मालती का चरित्र-चित्रण कीजिए ।
14. राय साहब अमरपाल सिंह रंग हुए सियार हैं - इस कथन की सत्यता सिद्ध कीजिए ।
15. 'गोदान' गाय को केंद्र में रखकर लिखा गया उपन्यास है । आप इस कथन से कहाँ तक सहमत हैं, चर्चा कीजिए ।
16. सिलिया के चरित्र के माध्यम से लेखक पाठकों पर क्या प्रभाव डाना चाहते हैं ?

Scanned by TapScanner

17. झुनिया का चरित्र-चित्रर कीजिए ।

18. दातादीन और मातादीन के चरित्रों के माध्यम से लेखक समाज की किस दशा को उजागर करना चाहते हैं ।

19. किसान की आर्थिक दशा को बिगाड़ने में कौन-कौन उत्तरदायी हैं, 'गोदान' के आधार पर समझाइए ।

20. 'गोदान' में यथार्थ और आदर्श का किस प्रकार समन्य दिखाया गया है, विवेचन कीजिए ।

Scanned by TapScanner